महाशिवरात्रि पर्व
हे देवाधिदेव महादेव! मानवमात्र को सद्विवेक की दिव्य ज्योति प्रदान करो 2

बस्तर संभाग के सात जिलों में वात्सल्य, उत्साह एवं संवेदना का प्रवाह 4

आओ जानें अपना विश्वविद्यालय
हर व्यक्ति के लिए हैं अनन्त संभावनाएँ 6

वसंत पंचमी
जीवन का सौन्दर्य है ज्ञान 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news.shantikunj@gmail.com

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 मार्च 2021

वर्ष : 33, अंक : 17

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 27 फरवरी 2021

वार्षिक चंदा : .....₹60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) :.....₹ 800/-

प्रति अंक : .....₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

बस एक ही विकल्प-विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय

मानवीय उत्कर्ष के लिए वैज्ञानिक प्रगति के साथ आत्मिकी के उत्थान भी आवश्यक है। - प.पू. गुरुदेव

ध्वंस से सृजन की ओर

यह संसार, विश्व ब्रह्माण्ड जड़ और चेतन दोनों के ही सम्मिश्रण से बना है। यहाँ प्रकृति और प्राण का ही सामंजस्य है। चेतन को परिष्कृत करने पर जो उपलब्धियाँ हस्तगत होती हैं, उन्हें ऋषियुग में, सतयुग में लम्बी अवधि तक जाना-परखा जा चुका है। इस देश की गौरव गरिमा का इतिहास उसी वर्चस्व से ऐतिहासिक बना और प्रख्यात रहा है।

बीसवीं शताब्दी में प्रधानतया भौतिकता की सत्ता को प्रमुखता मिली। इस अवधि में दो विश्व युद्ध और 100 से अधिक क्षेत्रीय युद्ध हुए। भौतिकवादी ललक की ही यह संरचना है, जिसके कारण अपार धन-जन की हानि हुई। चिन्तन, चरित्र और व्यवहार सभी कुछ लड़खड़ा गया। प्रगति युग के अगले चरण कितने भयावह हो सकते हैं, इसकी कल्पना मात्र से दिल दहल जाता है। अब यह विचारने के लिए नये सिरे से बाधित होना पड़ रहा है कि भौतिक मान्यताओं के आधार पर संसार को क्या इसी गति से चलने दिया जाना है या अतीत में बरते गये उन सिद्धान्तों को फिर से अपनाया जाना है, जिनके आधार पर मनुष्यों में देवत्व और धरती पर स्वर्ग जैसा वातावरण बना हुआ था?

धर्मतंत्र की विडम्बना

इस असमंजस में एक और नई कठिनाई सामने है कि पुरातन की साक्षी को ध्यान में रखकर यदि जीवनचर्या और लोक व्यवहार को अध्यात्म तत्वज्ञान के स्तर पर विनिर्मित करने की बात सोची जाय तो यहाँ भी भारी विडम्बना सामने खड़ी होती है। प्रचलित अध्यात्म सिद्धान्तों और प्रचलनों में भी विकृतियों का, अवाँछनीयता का इतना अधिक अनुपात घुस पड़ा है कि कसौटी पर कसते ही वह भी खोटे सिक्के की तरह अप्रामाणिक ही सिद्ध होते हैं। लाखों संत-साधु, लाखों भजनानंदी, लाखों कर्मकाण्डी, पूजा व्यवसायी जिस स्थिति में रह रहे हैं, उनके स्तर को उलट-पुलट कर जाँचने से प्रतीत होता है कि इस क्षेत्र में भी विडम्बना के अतिरिक्त और कुछ शेष बच नहीं रहा है। किसी जमाने में थोड़े से संत न केवल भारत को वरन समस्त विश्व को हर दृष्टि से समुन्नत एवं सुसंस्कृत बनाये रखने में समर्थ हुए थे, पर अब तो उनकी संख्या हजारों-लाखों गुनी हो गई है। इतने पर भी विश्वकल्याण की, भारतभूमि की गरिमा को बनाये रहने की बात तो दूर स्वयं के व्यक्तित्व को भी इतना गया गुजरा बना बैठे हैं कि सहज विश्वास नहीं होता कि इस प्रयोजन में भी कुछ उत्कृष्टता एवं विशिष्टता शेष रह गई है।

कुछ दिन पूर्व गाँधी, बुद्ध जैसी कुछ ही प्रतिभायें प्रकट हुई थीं और अपने व्यक्तित्व तथा कृतित्व से संसार भर में आस्था, उत्साह और उल्लास की एक नई लहर चला सकने में समर्थ हुई थी, पर अब तो उनकी गणना आश्चर्यजनक गति से बढ़ जाने पर भी वातावरण को परिष्कृत करना तो दूर अपने आप को भी प्रामाणिक एवं प्रतिभावान बना पाना दीख नहीं पड़ता। इस निरीक्षण परीक्षण से प्रतीत होता है कि जैसे लांछन भौतिकवाद पर लगाये जाते हैं उससे भी अधिक प्रस्तुत अध्यात्मवाद पर लगाये जा सकते हैं। धर्म के नाम पर जितनी विडम्बनाएँ चलती हैं, उन्हें देखते हुए उसे भी अपनाने योग्य मानने के लिए मन नहीं करता।

असमंजस की स्थिति और समाधान

दोनों ही रास्ते अनुपयुक्त दीखने पर प्रश्न यह उठता है कि इनके अतिरिक्त कोई तीसरा विकल्प भी है क्या? आस्तिकता और नास्तिकता के, श्रेष्ठता और निकृष्टता के बीच क्या कोई मध्य मार्ग भी है। इस असमंजस के बीच एक हल उभरता है कि भौतिक विज्ञान को अध्यात्म तत्वज्ञान के साथ जुड़ना चाहिए था और अध्यात्मवाद का स्वरूप ऐसा होना चाहिए था, जिसे प्रत्यक्षवाद की कसौटी पर भी खरा सिद्ध किया जा सके।

भौतिकवादी मान्यताओं का अपना आकर्षण ही इतना बड़ा है कि उसने 99% क्षेत्र को अपनी चपेट में ले लिया है। उसकी अच्छाई बुराई भी आँखों के सामने है। मात्र अध्यात्म ही ऐसा है जो रहस्य बनकर रह रहा है। उसे नकारते इसलिए नहीं बन पड़ता कि शास्त्रकारों, आप्तजनों और ऋषिकल्प व्यक्तियों के आधार पर जो उत्कृष्टतावादी निष्कर्ष निकलता है उसे अमान्य ठहराने का कोई कारण नहीं। उसकी प्रामाणिकता असंदिग्ध है। योगी अरविंद, महर्षि रमण, समर्थ रामदास, रामकृष्ण परमहंस आदि प्रतिभाएँ उस पक्ष को अपनी वरिष्ठता के बल पर भी सही सिद्ध करती रही है।

रहस्य क्या है? यह खोजने की बात सामने आने पर भूतकाल की साक्षी और वर्तमान की दूरदर्शी विवेचना यही बताती है कि जनकल्याण अध्यात्म पर ही अवलम्बित हो सकता है। खोट इतना भर है कि आध्यात्मिक तत्वज्ञान और प्रयोग परीक्षण में कहीं कुछ ऐसा अनुपयुक्त अड़ गया है जिसके कारण सूर्योदय रहते हुए भी पूर्णग्रहण जैसा कुछ लग जाने के कारण दिन होते हुए भी अन्धेरा छाने लगता है। अनुपयुक्त प्रयोग से तो विशिष्टता भी निकृष्टता में बदल सकती है। जिस प्रकार आदर्शों के अनुशासन को अस्वीकृत कर देने के कारण भौतिक विज्ञान की उपयोगिता और यथार्थता विनाशकारी परिणाम उत्पन्न कर रही है, संभवतः अध्यात्म ने भी उलटबाँसी अपनायी है, और असली के स्थान पर नकली के आ विराजने पर उसकी भी प्रामाणिकता एवं उपयोगिता खतरे में पड़ गई है।

सिद्धि का द्वार परिष्कृत व्यक्तित्व

इन पंक्तियों का लेखक अपनी जिन्दगी के प्रायः अस्सी वर्ष पूरे करने जा रहा है। उसने उस पुरातन अध्यात्म को खोज निकालने के लिए अपने चिन्तन, समय, श्रम एवं पुरुषार्थ को मात्र एक केन्द्र पर केन्द्रित किया है कि यदि सतयुगी अध्यात्म सत्य है, यदि ऋषियों की उपलब्धियाँ सत्य हैं, तो उनका वास्तविक स्वरूप क्या रहा होगा?

अध्ययन, अनुभव, प्रयोग और विशेषज्ञों की पूछताछ से पता चला है कि आत्मिकी का प्रथम पक्ष है 'साधक का परिष्कृत व्यक्तित्व' और दूसरा पक्ष है 'साधना-उपासना स्तर का उपक्रम'। जीवन साधना को 'स्वास्थ्य' और कर्मकाण्ड परक उपचारों को 'शृंगार' स्तर का कहा जा सकता है, पर इन दिनों किसी भटकाव ने लोगों को ऐसा कुछ बना दिया है कि जीवन साधना की कोई विशेष आवश्यकता नहीं है, मात्र पूजापरक कर्मकाण्डों के ही बलबूते उस सारी महत्ता को हस्तगत किया जा सकता है।

समस्त विश्व के, मानव समुदाय के भाग्य और भविष्य का भला-बुरा निर्धारण करने वाले इस प्रसंग पर अत्यन्त गहराई तक शोध करने के लिए आकुल-व्याकुल उत्कंठा से द्रवित होकर किसी दिव्य मार्गदर्शक ने संकेत किया कि इस तथ्य को प्रारंभ से ही समझ लेना चाहिए कि अध्यात्म को अंकुरित पल्लवित एवं पुष्पित होने के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि इस प्रयोजन में प्रवेश करने वाले का व्यक्तित्व उत्कृष्टता से सुसम्पन्न हो। इसके पश्चात् ही उपासना परक कर्मकाण्डों की कुछ उपयोगी प्रतिक्रिया उपलब्ध होती है। यदि मनोभूमि और जीवनचर्या गंदगी से भरी हो तो समझना चाहिए कि मंत्र की, पूजा उपचार की प्रक्रिया प्रायः निरर्थक ही सिद्ध होगी। समय, श्रम और साधन-सामग्री निरर्थक गँवाने के अतिरिक्त और कुछ हाथ न लगेगा।

अध्यात्म दिव्य शक्ति का आधारभूत पुञ्ज-स्रोत है। ईश्वर के प्रति सुनिश्चित आत्मीयता की अनुभूति 'उपासना', जीवन में शालीनता की अविच्छिन्नता अर्थात् 'साधना' तथा करुणा और उदारता से ओतप्रोत अन्तराल में निरन्तर निर्झर की तरह उद्भूत होती रहने वाली 'आराधना'; यही है वह त्रिवेणी है जो मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाती है। उस संगम तक पहुँचने पर कल्मष-कषायों, दोष-दुर्गुणों के प्रवेश कर सकने जितनी गुंजायश भी शेष नहीं रहती।

अध्यात्म-विज्ञान परस्पर पूरक बनें

इन दिनों विज्ञान के प्रतिपादन पत्थर की लकीर बनकर जन-जन की मान्यताओं को अपने प्रभाव क्षेत्र में समेट चुके हैं। आज की मान्यताएं और गतिविधियाँ उसी से आच्छादित हैं और तदनुरूप प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न कर रही हैं। लेकिन विज्ञान तो सज्जा भर का प्रदर्शन करता है उसमें आकर्षण और प्रलोभन के द्वारा बल-बुद्धि को फुसलाने के लिए खिलौने जैसी चमक-दमक के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं।

अध्यात्म का स्वरूप विडम्बना स्तर का बनकर रह गया है, फलस्वरूप उसका न किसी साधनारत पर प्रभाव पड़ता है और न वातावरण को उच्चस्तरीय बनाने में कोई सहायता ही मिल पाती है। इस दुर्गति के दिनों में यही उपयुक्त लगा है कि यदि विज्ञान के प्रत्यक्षवाद को, यथार्थता को जिस प्रकार अनुभव कर लिया गया है, उसी प्रकार अध्यात्म को भी यदि सशक्त एवं प्रत्यक्ष फल देने वाला माना जा सकने का सुयोग बन सके तो समझना चाहिए कि सोना और सुगंध के मिल जाने जैसा सुयोग बन गया। विज्ञान शरीर और अध्यात्म प्राणचेतना मिलकर काम कर सकें तो समझना चाहिए कि सब कुछ जीवन्त हो गया। एक प्राणवान दुनियाँ समग्र शक्ति के साथ नये सिरे से नये कलेवर में उद्भूत हो गई। न विज्ञान झगड़ालू रहा और न अध्यात्म के साथ जो कुरूपता जुड़ गई है, उसके लिए कोई गुंजायश ही शेष रह गई है।

वाङ्मय 29 (सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण), पृष्ठ 3.9-12 से संकलित-सम्पादित

हे देवाधिदेव महादेव! मानवमात्र को सद्विवेक की दिव्य ज्योति प्रदान कीजिए

असुरता के विरुद्ध सज्जनों को युगधर्म निभाने और भूली-भटकी मानवता को सत्पथ पर चलने का साहस दीजिए

परम पूज्य गुरुदेव का कथन

परम पूज्य गुरुदेव ने पुस्तक लिखी है-'महाकाल की युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया'। इसमें उन्होंने विगत युगों में छाई असुरता पर देवत्व के विजय का दर्शन समझाया है। साथ ही यह भी बताया है कि यह युग परिवर्तन की वेला है, इतिहास की पुनरावृत्ति के क्षण हैं। वर्तमान युग में हो रही उथल-पुथल प्रज्ञावतार की युग परिवर्तन प्रक्रिया के अनिवार्य चरण हैं। जो स्रष्टा के संकेतों को समझ जायेंगे, वे सौभाग्यशाली होंगे। जो नहीं समझ पायेंगे वे काल के कठोर प्रहारों से बच नहीं पायेंगे। इस पुस्तक के पहले अध्याय में पूज्य गुरुदेव लिखते हैं-

"अगले दिनों महाकाल का वह क्रिया-कलाप सामने आने वाला है जिसमें अगणित लोगों को अनेक प्रकार के कष्ट सहने पड़ेंगे। महायुद्ध, गृह-युद्ध, शीत-युद्ध, व्यक्ति-युद्ध, प्रकृति-युद्ध आदि अनेक प्रकार के क्लेश, संघर्ष, उद्वेग, अवरोध सामने आने वाले हैं। इनसे हर व्यक्ति को ऐसे झटके लगेंगे कि उसे विवशता अथवा स्वेच्छा से अपनी वर्तमान रीति-नीति बदलने के लिए विवश एवं बाध्य होना पड़ेगा।

सफलता और उन्नति के नशे में मनुष्य झूमता रहता है, हर्षोल्लास एवं वैभव-सुविधा के वातावरण में मनुष्य का केवल अहंकार ही बढ़ता है। अहंकारी को आत्मनिरीक्षण की फुर्सत कहाँ? उसे सुधारने-समझाने का साहस कौन करे? इस विपन्नता को महाकाल की रुद्रता ही दूर करती है। वह दुःख-दुर्भाव, शोक-संताप का ऐसा डंडा घुमाती है कि उसकी करारी चोटें खा-खाकर मनुष्य कराहता है। इस कराह के साथ-साथ ही उसे अपनी भूलों को खोजने तथा सुधारने की याद आती है। भूलों को रास्ते पर लाने का यह तरीका है तो निर्मम, पर साथ ही उसकी अमोघता भी स्वीकार करनी पड़ेगी।"

आज महिषासुर ने सामंतवादी-साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का रूप धारण किया है। युद्ध अभाव या अधिकार के लिए नहीं लड़े जाते। युद्ध तो अपनी सामर्थ्य के अहंकार या सबकुछ हड़प लेने की नीयत का परिणाम हुआ करते हैं। ऐसी सोच ने आज सारे विश्व में अस्थिरता और अशान्ति का वातावरण बना रखा है। जिन देशों में रोटी, कपड़ा, मकान और शिक्षा की समस्याएँ ही नहीं सुलझ पा रहीं, उन्हें अणु-आयुधों पर निरर्थक ख़र्च करने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है।

जाति-धर्म, वर्गों के नाम पर आतंक और युद्धोन्माद बढ़ता ही जा रहा है। परमात्मा ने सभी मनुष्यों को एक जैसी आकृति-प्रकृति और एक जैसे ही रक्त के साथ जन्म दिया है, लेकिन मानवीय दुर्बुद्धि अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर एक-दूसरे को मारने-काटने और बाँटने पर उतारू दिखाई देती है।

भगवान शिव ने जिस त्रिपुरासुर का संहार किया था वह तीन असुर लोभ, मोह, अहंकार ही थे। आज पुनः उनका साम्राज्य चतुर्दिक छाया हुआ दिखाई देता है। संसार में अभाव ने नहीं, आने वाली कई पीढ़ियों के लिए धन संचय की वृत्ति ने ही मनुष्य को अन्याय, अनाचार, अत्याचार के रास्ते पर धकेल रखा है। व्यामोह ऐसा छाया है कि उसने अपनी सुख-सुविधा के लिए अपने, पराये और प्रकृति के पोषण नहीं, शोषण का मार्ग चुना है। शास्त्र वचन है और प्रकृति का नियम है कि बढ़ती सामर्थ्य के साथ व्यक्तित्व में विनम्रता एवं उदारता का समावेश होना चाहिए। फले हुए वृक्ष सदा झुकते हैं। लेकिन आज बुद्धि एवं सामर्थ्य कर्त्तव्यों की सुध लेने की अपेक्षा अहंकारवश अधिकार के लिए लड़ती अधिक दिखाई दे रही है।

राजनीति प्रजा के रक्षण-पोषण की अपेक्षा स्वार्थ-सिद्धि पर उतारू है। शिक्षा का ध्येय व्यक्तित्व परिष्कार होना चाहिए, लेकिन वह भी व्यवसाय बनती जा रही है। निरंतर बढ़ती रोगियों की संख्या चीख-चीख कर कह रही है कि श्रम केवल कमाई के लिए नहीं, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। प्रकृति के साथ जिओगे तो निरोग रहोगे। लेकिन हम सुख-सुविधाओं में जीवनयापन को ही अपनी शान समझ रहे हैं। नशे के दानव का नाश करने के भरपूर प्रयास हो रहे हैं, लेकिन वह रक्तबीज की तरह बढ़ता ही जा रहा है। बढ़ती जनसंख्या एवं प्रदूषण के बोझ को सह सकना अब धरती माता के बस की बात नहीं।

विनाश की घातक दिशा-धारा

जब-जब भी ऐसी आसुरी प्रवृत्तियों से धरती पर विनाश का संकट छाया है, दैवी सत्ताओं ने हस्तक्षेप कर असुरता को परास्त करने का सरंजाम जुटाया है। इन दिनों भी परम पूज्य गुरुदेव के प्रचण्ड तप और दैवीय शक्तियों के परोक्ष सहयोग से युग के नवनिर्माण की प्रक्रिया चल रही है, जो सृष्टि को विनाश से बचाकर मानवता का भविष्य उज्ज्वल करने के लिए संकल्पित है। पूज्य गुरुदेव ने 'इक्कीसवीं सदी में सतयुग की वापसी' का स्पष्ट उद्घोष किया है, जो चरितार्थ होकर रहेगा। लेकिन साथ ही यह भी कहा है कि राम के रीछ-वानर, कृष्ण के ग्वाल-बाल, बुद्ध के परिव्राजक, गाँधी के सत्याग्रहियों के रूप में युगों-युगों में जो देवात्माएँ अवतारी चेतना की सहयोगी रही हैं, उन्हें प्रज्ञावतार के लीला सहचर बनकर इस युग में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। क्या करना होगा? इसका संकेत उन्होंने अपनी पुस्तक 'महाकाल की युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया' में ही दिया है। वे लिखते हैं-

"हमें यह भी जानना चाहिए कि महाकाल का युग निर्माण प्रत्यावर्तन केवल सरकार और सेनाओं के माध्यम से लड़ी जाने वाली लड़ाई तक ही सीमित नहीं है, वरन् उसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। वर्ग-संघर्ष और गृह-युद्ध की परिस्थितियाँ उग्र से उग्रतर होती चली जा रही हैं। हड़तालें, घिराव, धरना, कलम-बन्द आन्दोलन के पीछे केवल आर्थिक कारण ही नहीं, मनोभूमि का विक्षोभ भी है। इन आन्दोलनों का संचालन वे कर रहे हैं जो करोड़ों देशवासियों की अपेक्षा कहीं अधिक सुविधाजनक स्थिति में हैं। भाषा, सम्प्रदाय, प्रान्त और छोटे-छोटे कारणों को लेकर अप्रत्यक्ष रूप से गृह-युद्ध जैसी स्थिति पैदा हो रही है। यह तो भारत की आन्तरिक स्थिति की बात हुई। वस्तुतः समस्त विश्व में यही वातावरण व्याप्त है।"

धन के बलबूते पर भारत की छवि बिगाड़ने के हर संभव प्रयास हो रहे हैं। आन्दोलनों का सूत्र-संचालन विघटनकारी शक्तियों के हाथों में जाता दिखाई दे रहा है। विदेशी आक्रान्ता तरह-तरह के षड़यंत्र कर रहे हैं और लोभ-मोह के वशीभूत होकर अपने देश के ही कुछ स्वार्थीतत्त्व देशवासियों का मनोबल गिराने व विदेशी ताकतों का सहयोग करने की भूल दोहराते दिख रहे हैं। जिन भूलों के कारण हमारा देश एक हज़ार वर्ष की गुलामी झेल चुका है, वही परिस्थितियाँ फिर से बनाने के प्रयास हो रहे हैं।

आज का युगधर्म

इन दिनों मानवता गहरे संकट में दिखाई दे रही है। देव संस्कृति पर असुरता के कठोर प्रहार हर ओर से हो रहे हैं। भौतिकता एवं प्रत्यक्षवाद के मद में मानव इतना चूर है कि न उसे भविष्य की परवाह है और न ही दूसरों के सुख-दुःख की। देव संस्कृति के उत्थान के प्रयास कम नहीं हो रहे, लेकिन अनास्था, अविश्वास और भय-असुरक्षा का ऐसा वातावरण विनिर्मित हो चुका है कि सबकुछ जानते-समझते हुए भी मानवता सही मार्ग पर चलने का साहस नहीं जुटा पा रही।

भारत वर्ष सनातन संस्कृति-देव संस्कृति का अनुयायी है। हम "वसुधैव कुटुम्बकम्" के सिद्धान्त को अपनाते और मानवमात्र के कल्याण की चाह रखते हुए सारे विश्व को शान्ति और सन्मार्ग की दिशा देते रहे हैं। आज भी हम उसी सिद्धान्त के आधार पर सारे विश्व के कल्याण की सोच के साथ बढ़ रहे हैं। लेकिन आसुरी शक्तियाँ आज भी हमारे सत्प्रयासों को निष्फल करने के पुरजोर प्रयास कर रही हैं। इन दिनों युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव की लिखी सारी बातें चरितार्थ होती स्पष्ट दिखाई दे रही हैं।

इस विनाशोन्मुख विचारधारा से बचाकर देश को सृजन की राह पर ले जाना ही होगा। यही आज का युगधर्म है। जैसा कि पूज्य गुरुदेव ने लिखा है, रौद्ररूप धारण करती प्रकृति और आज की कठिन परिस्थितियाँ संभवतः मनुष्य को अपनी वर्तमान रीति-नीति बदलने के लिए बाध्य करने की ईश्वरीय योजना का ही एक अंश हो। वे लिखते हैं-

"चूँकि मनुष्य जाति अभी भी अनीति का मार्ग न छोड़ने के अपने दुराग्रह पर अड़ी हुई है इसलिए प्रत्यक्ष दीखता है कि हमें अगले ही दिनों पुनः महाकाल के कोप-भयानक विपत्तियों में होकर गुजरना पड़ेगा। सम्भव है यह दण्ड विधान हमें दुर्जनता का पथ छोड़ कर समानता अपनाने के लिए प्रेरित करे। ऐसा हो सका तो इन भावी विभीषिकाओं को भी नवयुग की प्रसव-पीड़ा मान कर मंगलमय ही कहा जायेगा।"

प्रमुख आवश्यकताएँ

अक्टूबर 1985 में परम पूज्य गुरुदेव का दिया प्रवचन 'उलटे को उलटकर सीधा करें' शान्तिकुञ्ज के यू-ट्यूब एकाउंट पर उपलब्ध है। इसमें उन्होंने दो बातें प्रमुखता से दोहराई हैं। (1) युग निर्माण के लिए अधिक से अधिक समयदान करें और (2) उपासना, साधना, आराधना उद्देश्यपूर्ण हो। (3) प्रखर साधना में भागीदारी

समयदान : समयदान आज की सर्वोपरि आवश्यकता कहा है। यह सही है कि साधना से परिष्कृत व्यक्तित्व ही भूली-भटकी मानवता को सही राह दिखा सकते हैं, लेकिन पूज्य गुरुदेव ने वर्तमान समय को आपातकाल कहा है। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि आज सारी दुनिया में आग लगी है। इसे बुझाने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता समयदान की है। उन्होंने समयदान करने वालों को अपनी तप-साधना का एक अंश देकर व्यक्तिगत उपासना की पूर्ति करने का आश्वासन भी दिया है और उनके जीवन रथ को सुचारू रूप से चलाने के लिए अपनी शक्ति और संरक्षण दिये जाने का विश्वास दिलाया है। आवश्यकता एक ही है कि हम अपने विवेक को जगायें, साहस और संकल्पपूर्वक विचार क्रान्ति अभियान एवं सृजनात्मक गतिविधियों को गति देने में तत्परता से जुट जायें।

साधना उद्देश्यपूर्ण हो : परम पूज्य गुरुदेव ने उपासना, साधना, अनुष्ठानों में कर्मकाण्ड की औपचारिकताओं से कहीं अधिक जीवन साधना को महत्त्व दिया है। उन्होंने कहा कि हमारी उपासना-साधना और गतिविधियाँ युग निर्माण के अभीष्ट लक्ष्य को पूरा करने के लिए हों। उन्होंने दिशाहीन होते और सामान्य मन्दिरों जैसी ही गतिविधियाँ चला रहे कुछ शक्तिपीठों के प्रति आक्रोश व्यक्त किया था, कहा था कि हम शान्तिकुञ्ज में ऐसी व्यवस्था कर देंगे जहाँ सारी शक्तिपीठों की मूर्तियाँ ले आयी जायें और यहीं उनकी आरती-पूजा होती रहे। उनका भाव इतना ही था कि पूजा-प्रार्थना के अलावा जन-जागरण के जिन उद्देश्यों के लिए हमारे प्रज्ञा संस्थान बने हैं, उनकी पूर्ति वहाँ से होती रहे, इसीमें उनकी सार्थकता है। उसी तरह हमारी साधना भी उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए।

प्रखर साधना में भागीदारी : महाकाल के रौद्ररूप को देखकर और उसकी करारी चोट खाकर कराहती मानवता को जीवन जीने की सही राह दिखाने वाले अग्रदूतों की आवश्यकता होगी। प्रज्ञापुत्रों को यह कार्य अपने परिष्कृत व्यक्तित्व के माध्यम से ही करना होगा। हमारे गुरुदेव ने प्रचण्ड साधना के बल पर अपने व्यक्तित्व को हिमालय जैसी ऊँचाई और सागर जैसी गहराई प्रदान की। हम प्रज्ञापुत्रों को उनके जीवन सूत्रों को अपनाते हुए प्रगतिशील विचारों से युक्त ऐसा सादगीपूर्ण शालीन जीवन जीने की साधना करनी होगी जो औरों में भी अनुकरण की उमंग जगा सके। हमारा आत्मबल इतना सुदृढ़ हो कि लोगों में अध्यात्म पथ पर चलने का उत्साह जागे। हमारी निःस्वार्थ सेवा, सदाशयता, प्रेमभावना, आत्मीयता और उदारता ऐसी हो जिसके पीड़ित-पतित मानवता की हताश-निराश आँखों में आशा की चमक ला सके। लोग साधन-संचय के सुख की कामना और अहंकार के प्रदर्शन की अपेक्षा हमारे भक्तिभावजन्य आनन्द के प्रति अधिक आकर्षित हो सकें।

इन दिनों वसंत पंचमी से होली तक 40 दिवसीय वैश्विक सामूहिक साधना अनुष्ठान चल रहा है। अपने मिशन में व्यक्तिगत एवं सामूहिक साधनाओं का क्रम अनवरत चलता ही रहता है। व्यक्तित्व परिष्कार एवं वातावरण परिशोधन के लिए यह प्रयोग नितांत उपयोगी और आवश्यक है। ध्यान इतना ही रखना है कि हम केवल कर्मकाण्ड में समय गँवाकर अपनी साधना की पूर्णाहुति न मान बैठें, बल्कि व्यक्तित्व परिष्कार के लिए सुनिश्चित प्रयास भी करें।

देवाधिदेव महादेव से प्रार्थना

11 मार्च 2021 को हम महाशिवरात्रि पर्व मना रहे हैं। यह शिव और शक्ति के परिणय का महापर्व है। इस पर्व पर हमें यही प्रार्थना करनी चाहिए कि जिस प्रकार देवाधिदेव महादेव और माता पार्वती ने मिलकर पूर्व युगों में असुरता का संहार किया, वैसे ही इस युग में मानव-मन में व्याप्त असुरता के दमन के लिए मानवमात्र को सद्विवेक की दिव्य ज्योति प्रदान करें। देवत्व की पक्षधर आत्माओं को संगठित कर उन्हें मानवता का पथ प्रदर्शन करने योग्य सामर्थ्य एवं साहस प्रदान करें तथा काल के कठोर प्रहारों का सामना करने की अपेक्षा विश्व-मानवता को सज्जनता, सादगी, सदाशयता को अपनाने की प्रेरणा मिले। वरना महादेव के त्रिशूल और माता पार्वती के दुर्गा और काली रूप का सामना इस युग की असुरता को करना ही पड़ेगा।

पाप में पड़ना मानव प्रकृति है, उसमें डूबे रहना शैतान प्रकृति है। पाप पर दुःखी होना सन्त प्रकृति है और सब पापों से मुक्त होना ईश प्रकृति है। - लांगफेलो

सेवा और नवसृजन अभियान को गति देते विविध रचनात्मक कार्यक्रम

कुष्ठ रोग निवारण पखवाड़ा मनाने की वार्षिक परम्परा

जोबट जिला ,अलीराजपुर। म.प्र.

गायत्री शक्तिपीठ जोबट पर हर वर्ष 30 जनवरी से 13 फरवरी तक वहाँ कुष्ठ रोग उन्मूलन पखवाड़ा मनाया जाता है। इस वर्ष इसके प्रथम दिन- महात्मा गांधी की पुण्य तिथि पर जिला चिकित्सालय की सहायता से कुष्ठ विकृति सुरक्षा निवारण शिविर का आयोजन किया गया। श्री एम.सी. पाठक ने पूरी तहसील से 28 रोगियों को चिह्नित कर उन्हें उपचार के लिये शक्तिपीठ पर आमंत्रित किया। जिला कुष्ठ अधिकारी डॉ. रवींद्र रायकवार ने उपस्थित सभी रोगियों को सावधानियों तथा उपचार विधि से परिचित कराया। उन्होंने समय-समय

मरीज़ों को रोग निवारण सम्बन्धी जानकारी देते चिकित्सक

पर लोगों को इसकी जाँच के लिये आग्रह भी किया ताकि शारीरिक विकलांगता से बचा जा सके। इस शिविर के आयोजन में श्री मेवालाल अग्रवाल का विशेष सहयोग रहा। शिविर की समाप्ति दिवस पर पैरों से विकलांग रोगियों को चप्पलें भी वितरित की गईं।

शांतिकुंज के स्वर्ण जयंती वर्ष को 'रक्तदान वर्ष' के रूप में मनाएगी लखीमपुर-खीरी की युवा शाखा

जनवरी में पाँच शिविर, 184 यूनिट रक्तदान

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ लखीमपुर-खीरी ने शन्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयंती वर्ष को 'रक्तदान वर्ष' के रूप में मनाने का निश्चय किया है। श्री अनुराग मौर्य के अनुसार उनकी शाखा पूरे वर्ष महापुरुषों की जयन्ती तथा अन्य महत्त्वपूर्ण अवसरों पर रक्तदान शिविरों का आयोजन कर रही है। जनवरी में कुल पाँच शिविर लगाए गए। इनके माध्यम से 184 यूनिट रक्त ज़रूरतमंदों के लिए एकत्रित कराया गया। ये शिविर क्रमशः मोहम्मदी ब्लाक में गोविंद गुप्ता जी के संयोजन में (35

रक्तदान के लिए युवाओं में झलकता भरपूर उत्साह

यूनिट), 21 जनवरी को औद्योगिक प्रतिष्ठान जेटीसी के संयोजक ज्ञान प्रकाश शुक्ला (ज्ञानू महाराज) द्वारा (41 यूनिट), नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती के अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ लखीमपुर पर (28 यूनिट), पलिया ब्लाक के बोझवा गाँव में श्री विनय सिंह जी के संयोजन में (26 यूनिट) तथा गोला गोकर्णनाथ में मुकेश गुप्ता जी के संयोजन में (54 यूनिट) आयोजित हुए।

सिवनी में 70 यूनिट रक्तदान

सिवनी। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार केवलारी एवं कामधेनु गौशाला कोहका-बगलेई द्वारा नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयंती पर स्वैछिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। वहाँ पिछले नौ वर्षों से नेताजी की जयन्ती पर रक्तदान की परम्परा चल रही है।

रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र देते परिजन

इस शिविर में आस-पास के जिलों के महिला-पुरुषों ने भागीदारी की। लगभग 70 यूनिट रक्तदान हुआ। गायत्री परिवार केवलारी के श्री सुरेंद्र साहू ने सभी रक्तदान करने वालों और मेडिकल सहायकों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

वसन्त ऋतु में स्वास्थ्यवर्धक है ब्राह्मी

उज्जैन जिले में 4000 लोगों ने ब्राह्मी पेय का सेवन किया

उज्जैन। मध्य प्रदेश

ब्राह्मी वसंत ऋतु में प्रकृति के सकारात्मक परिवर्तनों का लाभ लेने के लिए हमारे मस्तिष्क को उत्प्रेरित करती है। इस दृष्टि से गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन ने माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन नगरवासियों को ब्राह्मी पेय का सेवन कराया। 500 परिवारों के लगभग 2500 लोगों ने इसका सेवन किया। शहर के जड़ी-बूटी और जैव विविधता विशेषज्ञ श्री जे.पी. चतुर्वेदी ने बताया कि यह पेय ताजी ब्राह्मी बूटी के

जगह-जगह ब्राह्मी पेय सेवन के लिए उमड़ी जनमेदिनी

साथ थोड़ी मात्रा में बच,काली मिर्च शंखपुष्पी ,गुड़ मिलाकर तैयार किया गया था। यह सभी आयु वर्ग के लिए उपयोगी और निरापद है। योगाचार्य श्री नारायण सिंह जी ने बताया कि पेय का सेवन करने वालों को बुद्धि बढ़ाने की वैज्ञानिक विधि, गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिका भी दी गईं।

उज्जैन जिले की खाचरोद शाखा ने भी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त योग एवं प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. नरसिंह शर्मा के नेतृत्व में ब्राह्मी पेय तैयार कर 1500 से अधिक नगर वासियों को इसका सेवन कराया। ग्राम पाट में भी इसी तरह का आयोजन हुआ।

बलिप्रथा उन्मूलन

अखण्ड जप और यज्ञ कर निभाई परम्परा

खरसिया,रायगढ़,छत्तीसगढ़

खरसिया ब्लॉक समन्वयक श्री बी.एल. डनसेना एवं गायत्री परिवार के समर्पित परिजनों के प्रयासों से पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही कार्य गृह देवताओं के निमित्त बलि-पुजाई की परम्परा को बदलने में उल्लेखनीय सफलता मिली है। श्री रामचरण सिदार से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम सोंड़का के श्री जगदीश डनसेना ने प्रगतिशील विचारधारा को अपना कर समाज को नई प्रेरणा दी है।

श्री जगदीश डनसेना ने अपने यहाँ गृह देवताओं की पूजा में बलि नहीं दी। यह कार्यक्रम उन्होंने 24000 का गायत्री मंत्र जप एवं गायत्री यज्ञ के साथ अत्यंत सादा एवं सात्विक ढंग से सम्पन्न कराया। इस पुनित कार्य में गाँव के परिजन श्री श्यामसुंदर डनसेना, उनके अग्रज श्री थामसिंग डनसेना सहित श्री मुरलीधर डनसेना, सर्व श्री रघुबर पटेल, दौलत राम डनसेना, नारायण डनसेना, फूलबंधिया से श्री रामफल सिदार सहित ग्रामवासियों का सराहनीय सहयोग मिला।

प्लास्टिक प्रदूषण रोकथाम

बेकार वस्तुओं में लगा रहे हैं पौधे

पटियाला। पंजाब

गायत्री परिवार पटियाला के युवाओं ने बढ़ते प्लास्टिक प्रदूषण को देखते हुए पटियाला के युवाओं ने उन्हें जहाँ-तहाँ फैंकने की अपेक्षा उनका सदुपयोग करना सिखाने का बीड़ा उठाया है। ये युवा बेकार पड़ी बोतल एवं अन्य वस्तुओं में तरह-तरह के पौधे उगाते हैं और घर-दफ्तरों में सपर्क कर उनकी शोभा बढ़ाने के लिए भेंट करत हैं। शाखा कार्यवाह सुश्री नेहा गुप्ता ने बताया कि इस तरह की बेकार वस्तुओं में उपयोगी तुलसी आदि औषधियाँ, धनिया, पोदीना, ज्वारे जैसी उपयोगी वनस्पतियाँ लगाने की प्रेरणा भी लोगों को दी जा रही है।

स्वास्थ्य सेवाएँ

15 दिवसीय एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण शिविर

शाहजहाँपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री चेतना केन्द्र पुवायाँ ने 15 दिवसीय निःशुल्क एक्यूप्रेशर चिकित्सा प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया। प्रयागराज एक्यूप्रेशर संस्थान के एसोसियेट प्रोफेसर आचार्य अमर प्रताप चंद्रवंशी ने प्रशिक्षणार्थियों को एक्यूप्रेशर के माध्यम से रोगों का उपचार करने की विधा सिखाई। उन्होंने बिना औषधि के जटिल से जटिल रोगों का मर्म चिकित्सा द्वारा स्वयं उपचार कैसे हो सकता है, यह भी बताया। प्रतिदिन सुबह-शाम एक-एक घण्टे का प्रशिक्षण दिया गया।

रविवासरीय वृक्षारोपण का 25वाँ सप्ताह

पहाड़ी परिसर में वृक्षारोपण के लिए एकत्रित हुए पर्यावरण प्रेमी परिजन

राँची। झारखण्ड

दिया, राँची की युवा वाहिनी 2 अगस्त से प्रत्येक रविवार को वृक्षारोपण कार्यक्रम चला रही है। 24 जनवरी को इस अभियान का 25वाँ सप्ताह विशिष्ट समारोह के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष्य में पहाड़ी मंदिर परिसर में वृक्षारोपण का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विशेष रूप से आमंत्रित अतिथि राँची के मुख्य वन संरक्षक श्री अशोक कुमार ने वृक्षारोपण कर अभियान का शुभारंभ किया। 12 अशोक, 6 पाम ट्री, 5 बेल सहित कुल 25 पौधे रोपे गए। उपस्थित लोगों में अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ बाँटी गईं।

सराहनीय है कपड़ा बैंक योजना

ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर ज़रूरतमंदों में कपड़ा वितरण कर रहे परिजन

जोबट, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ जोबट अनेक वर्षों से कपड़ा बैंक चला रही है। इस योजना के अंतर्गत दीपावली के समय नगर-ग्रामवासी अपने अनुपयोगी कपड़ों को धोकर-प्रेस कर रख देते हैं। दीपावली के बाद परिव्राजक राम सिंह चौहान आदि गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता घर-घर जाकर उन्हें इकट्ठा करते हैं। तत्पश्चात् विभिन्न क्षेत्रों के अभावग्रस्त लोगों का सर्वे कर पूरी योजना के साथ एकत्रित कपड़ों

दिवाली की सफाई के समय घर-घर जाकर एकत्रित किए जाते हैं पुराने कपड़े

को ज़रूरतमंदों तक पहुँचा दिया जाता है।

इस वर्ष 29 जनवरी को यह कार्यक्रम दोहराया गया। इंदवन के ग्राम फलिया में गायत्री शक्तिपीठ के कार्यकर्ता श्री संबल सिंह मौर्य ने घर-घर जाकर सम्पर्क किया और सर्दी से बचाव के लिये लोगों में कंबल का वितरण किया।

प्रशासन से मिली बड़ी ज़िम्मेदारी

जिलाधिकारी को देवस्थापना चित्र भेंट करते गायत्री परिवार के परिजन

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

3 फरवरी को विकास खण्ड सेवापुरी पर तहसील दिवस मनाया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी श्री कौशल राज शर्मा एवं मुख्य विकास अधिकारी सहित कई वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों की उपस्थिति में गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट वाराणसी को बृहद गौ संरक्षक केन्द्र मधुमक्खियाँ के विकास एवं संचालन का दायित्व सौंपा गया। गायत्री परिवार की ओर से शाखा कार्यवाहक श्री गंगाधर उपाध्याय ने जिलाधिकारी महोदय से इस आशय का एम.ओ.यू. ग्रहण किया। उन्होंने प्रशासन को आश्वासन दिया कि गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट वाराणसी इसे एक आदर्श संरक्षण केन्द्र के रूप में विकसित करेगा। इस अवसर पर सेवापुरी ब्लॉक के सैकड़ों गायत्री परिजन उपस्थित रहे।

मनुष्य का सच्चा जीवन तब प्रारम्भ होता है, जब वह यह अनुभव कर लेता है कि शारीरिक जीवन अस्थिर है और वह सन्तोष नहीं दे सकता। -लियो टॉलस्टॉय

बस्तर संभाग के सात जिलों में अलौकिक वात्सल्य, उत्साह एवं संवेदना का प्रवाह

आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार

यह आध्यात्मिक-सांस्कृतिक चेतना के विस्तार का स्वर्णिम अवसर है

- आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या,
प्रतिकुलपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय

डॉ. चिन्मय जी, रायपुर की सभा को सम्बोधित करते हुए

"आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस प्रवास की हर सभा में परिजनों को शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती और कुम्भ के विलक्षण संयोग का लाभ उठाते हुए गाँव-गाँव, घर-घर तक युगचेतना का विस्तार करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि कुम्भ मेले जैसे विराट पर्व आध्यात्मिक-सांस्कृतिक चेतना के विस्तार का शानदार अवसर होते हैं। गंगा हमारी सांस्कृतिक विरासत है। कुम्भ के इन पावन क्षणों में हमें गंगा को घर-घर पहुँचाकर अपनी सांस्कृतिक चेतना के विस्तार का नैतिक दायित्व पूरा करना है। उन्होंने इस पुनीत लक्ष्य के संधान के लिए युवाओं से आगे आने और भागीरथी परम्परा का निर्वाह करने का विशेष रूप से आह्वान किया।"

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष एवं कुम्भ मेला हरिद्वार-2021 के विशिष्ट अवसर पर अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा चलाया जा रहा 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान पूरे देश में बेहद लोकप्रिय है। इसकी लोकप्रियता की झलक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के हर प्रवास में दिखाई दे रही है। वे राजस्थान, मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के बाद 29, 30, 31 जनवरी को छत्तीसगढ़ के प्रवास पर थे।

छत्तीसगढ़ अपनी श्रद्धा-भावना और समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं के लिए विख्यात है। डॉ. चिन्मय जी के दो दिवसीय प्रवास में उन्होंने सैकड़ों किलोमीटर की सड़क यात्रा करते हुए हज़ारों कार्यकर्त्ताओं की श्रद्धा-भावना को दिव्य पोषण प्रदान किया।

स्थानीय कार्यकर्त्ताओं की भावनाओं से शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि भी अभिभूत थे। उन्होंने हर सभा-सम्मेलन में अपने प्रेम, वात्सल्य से गुरुसत्ता के भावनात्मक स्पर्श की दिव्य अनुभूति कार्यकर्त्ताओं को कराई। इस प्यार और वात्सल्य के अनुपान के साथ कुम्भ के गंगाजल और युगऋषि की ज्ञानगंगा को पाकर हर हृदय समाज में सत्प्रेरणाओं के संचार एवं सद्भावनाओं के विस्तार के लिए उत्साहित, संकल्पित दिखाई दिया।

प्रान्तीय कार्यकर्त्ता संगोष्ठी

प्रथम कार्यक्रम 29 जनवरी को राजधानी रायपुर में हुआ। वहाँ आयोजित संगोष्ठी में रायपुर, दुर्ग, भिलाई, राजनांदगांव, कवर्धा, बेमेतरा, बलौदाबाजार, बिलासपुर एवं कोरबा जैसे दूरस्थ क्षेत्रों के लगभग 400 कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। डॉ. चिन्मय जी ने उन्हें 'आपके द्वार पहुँचा, हरिद्वार' अभियान को उद्देश्यपूर्ण एवं सफल बनाने के सूत्रों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि युगऋषि की दिव्य युग निर्माण योजना घर-घर पहुँचे, यह भगवान की इच्छा है। इच्छा को पूरा करने के लिए हम सबको संकल्पबद्ध होकर जुट जाना है।

अगले कार्यक्रम के लिए गायत्री शक्तिपीठ अभनपुर, सम्बलपुर, कुरुद होते हुए रात्रि 9 बजे गायत्री शक्तिपीठ धमतरी पहुँचे। वहाँ हुई सभा में स्थानीय परिजनों ने इस योजना को पूरे जिले में पहुँचाने का संकल्प व्यक्त किया।

देव संस्कृति विद्यालय का शुभारम्भ

30 जनवरी को कांकेर जिले के गायत्री चेतना आँवरी से अभियान का शुभारंभ हुआ। वहाँ जिले के परिजनों के अतिरिक्त लगभग 100 किलोमीटर दूर नगरी सिहावा क्षेत्र के दर्जनों परिजन भी उपस्थित रहें। वहाँ डॉ. चिन्मय जी ने देव संस्कृति विद्यालय का विधिवत शुभारंभ किया।

गायत्री प्रज्ञापीठ चारामा और जिला मुख्यालय कांकेर के बाद गायत्री शक्तिपीठ भानुप्रतापपुर में जनसभा को सम्बोधित किया। इसके पश्चात् युवा कार्यकर्त्ताओं की बहुलता वाले अंतागड में अभियान का उद्धेश्य समझाया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी कोण्डागाँव जिले की विशाल जनसभाओं को सम्बोधित करते हुए, उनके बायें श्री ओमप्रकाश राठौर, दायें श्री शुकदेव निर्मलकर

युगऋषि के स्मारकों की प्रतिष्ठा

अगला कार्यक्रम रावघाट में था। यह वह स्थान है जहाँ शक्तिपीठों की प्राण-प्रतिष्ठा के क्रम में परम पूज्य गुरुदेव ने बीहड़ जंगल में रास्ते में ही स्वयं गाडी रोकर विश्राम किया था। अब अपने भगवान-पूज्य गुरुदेव की स्मृतियों को अक्षुण्ण रखने के लिए वहाँ के परिजनों ने आकर्षक 'प्रखर प्रज्ञा, सजल-श्रद्धा' का निर्माण किया है। सैकडों परिजनों की उपस्थिति में डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उसका लोकार्पण किया।

खडगाँव पहुँचे, जहाँ परिजनों द्वारा बनाई गई नई गौशाला का शुभारंभ के अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि द्वारा किया गया।

नक्सल क्षेत्र में विशाल जनसभा

नक्सल प्रभावित क्षेत्र गायत्री शक्तिपीठ नारायणपुर में जान की परवाह न करते हुए गुरुकार्य में निरन्तर जुटे 500 कार्यकर्त्ताओं की विशाल जनसभा हुई। डॉ. चिन्मय जी ने इन प्राणवान लोगों में नवचेतना, नवउल्लास का संचार किया। उन्होंने कहा कि पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा और दिव्य संरक्षण आपकी सफलता का पथ प्रशस्त करेगा।

स्वावलम्बन प्रकल्प का शुभारंभ

4 वर्ष पूर्व पावडा में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का आगमन होना था, परन्तु ने आ सके। इस प्रवास में डॉ. चिन्मय जी के वहाँ पहुँचने से सभी उल्लसित एवं प्रफुल्लित थे। स्वालम्बन के प्रकल्प भी शुरूआत करने की योजना बनाई गई। पावडा नदी के सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में स्थित इस क्षेत्र को गायत्री परिवार द्वारा आरण्यक के रूप में विकसित करने की योजना भी है।

अगले कार्यक्रम बडे डोंगर, प्रज्ञापीठ अरण्डी, प्रज्ञापीठ खोरगांव में हुए। खोरगांव का सामाजिक सौहार्द्र दर्शनीय है। वहाँ गायत्री परिवार और कबीर पंथी लगभग बराबर की संख्या में हैं और परस्पर सहयोग से लोकमंगल की गतिविधियाँ चला रहे हैं। वहाँ हुई संगोष्ठी में 250 श्रद्धालु उपस्थित थे।

अगली बड़ी सभा के लिए टोली विश्रामपुरी होते हुए रात्रि 9 बजे बांसकोट पहुँची। 4 घण्टे से लगातार प्रतीक्षा कर रहे सैकड़ों परिजनों को आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने गुरुसत्ता का संदेश दिया। इस संदेश ने उपस्थिति लोगों के हृदय में एक अलग ही उल्लास एवं उमंग का वातावरण बनाया।

तारगांव रान्धना में कड़ी ठण्ड में जंगल के बीच रात्रि 10.30 बजे भी वहाँ 4 घटों से 600 परिजनों का विशाल समुदाय प्रतीक्षारत था। बस्तर संभाग के परिजनों की इस अतुलनीय श्रद्धा और अद्भुत अनुशासन के दर्शन कर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि भावविभोर हो गए। डॉ. चिन्मय जी ने क्षेत्र के निश्चल समर्पण भाव को बारम्बार प्रणाम किया।

31 जनवरी 2021 का दिन दण्डकारण्य परियोजना क्षेत्र-बस्तर संभाग के लिए समर्पित रहा। इस योजना के अन्तर्गत गायत्री परिवार दण्डकारण्य क्षेत्र के सभी जिलों में स्वावलम्बन के साथ समाज के समग्र विकास की योजनाएँ चला रहा है।

शुभारंभ कोण्डागांव के समीपवर्ती गाँव चिखलपुटी से हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों की सहभागिता के साथ वहाँ पर अनवरत चल रहे साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति की गई। साधना से उद्भूत ऊर्जा के साथ शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में घर-घर ज्ञानगंगा पहुँचाने के संकल्प लिए गए।

अगला कार्यक्रम दंतेवाडा जिले के नक्सल प्रभावित बारसुर में था। वनवासी परिजनों से भेंट मुलाकात, आत्मीयता विस्तार के बाद कोटवारपारा में युग संदेश दिया। वहाँ लगभग 100 वर्ष पुराने नाग देवता मंदिर (नागफनी) को गायत्री परिवार प्रज्ञापीठ के रूप में विकसित कर रहा है।

गायत्री शक्तिपीठ बीजापुर में हुई संगोष्ठी में दूर-दूर से आए लगभग 400 परिजन उपस्थित थे। उन्हें सम्बोधित करते हुए डॉ. चिन्मय जी ने युगसंधि की वर्तमान वेला को अनीति-अवाञ्छनीयताओं से संघर्ष की वेला बताया और ऐसे समय में भावनाशील धर्मपरायण लोगों से समाज में सृजनात्मकता और सकारात्मकता के विस्तार के लिए संगठित होकर प्रयास करने का आह्वान किया।

गायत्री शक्तिपीठ बीजापुर में नवनिर्मित यज्ञशाला का शुभारम्भ डॉ. चिन्मय जी द्वारा किया गया।

भव्य स्वागत समारोह : अधिकांश कार्यक्रम बस्तर क्षेत्र के थे। 30 जनवरी को 13 सभाएँ और मार्ग में अनेक शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ, शाखाओं पर स्वागत समारोह रखे गए थे। हर स्थान पर लोग गुरुसत्ता के प्रतिनिधि के रूप में उनके स्वागत के लिए घटों तक प्रतीक्षा करते हुए पलक पाँवड़े बिछाये खड़े दिखाई दिये। हर जगह कार्यकर्त्ताओं की लम्बी कतार एवं पुष्पवर्षा से स्वागत, आदिवासी पारम्परिक नृत्य एवं पारम्परिक रामधुन, पारम्परिक राउत नाच के साथ युगचेतना के दिव्य प्रवाह का भव्य स्वागत हुआ।

सघन जनसंपर्क : सभा-संगोष्ठियों के अलावा विभिन्न क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों एवं वरिष्ठ परिजनों के निवास में पहुँच कर स्वयं गंगाजली एवं देवस्थापना की।

गणमान्यों की आस्था : बड़ी संख्या में प्रशासनिक अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि, समाजसेवी कार्यक्रमों में पधारे। नारायणपुर में कलेक्टर श्री धर्मेश साहू सपत्नीक पधारे।

- पूरे प्रवास में जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री शुकदेव निर्मलकर, रामावतार पाटीदार, पुष्कर एवं हरीश नेताम के अलावा प्रादेशिक संगठन के वरिष्ठजन साथ रहे।

ऑवरी में आयोजित संगोष्ठी

दन्तेवाड़ा में कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधन

पुष्प की सुगन्ध वायु की विपरीत दिशा में नहीं जाती, पर ज्ञान की गन्ध तो दुनिया में फैलती और सुवास बिखेरती है। - हर्बर्ट स्पेन्सर

‘आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार’ अभियान को प्रभावशाली बनाने के योजनाबद्ध प्रयास

उपजोन कोरबा के 25000 घरों में स्थापना

कोरबा। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ पावर हाऊस चौक कोरबा पर 7 फरवरी को कोरबा व पास के दो अन्य जिलों में ‘आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार’ अभियान के क्रियान्वयन के लिए प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री सुखदेव निर्मलकर, श्री ब्योमेश देशमुख एवं श्री संतोष देवांगन ने कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन किया। दो-दो कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों की कुल 779 टोलियों का गठन हुआ, जो तीनों जिलों के 1120 गाँवों में संपर्क कर लगभग 25000 घरों में कुम्भ के प्रतीकों की स्थापना करायेंगी।

ग्राम-ढाणियों में सघन सम्पर्क अभियान

4000 घरों में पहुँचायेंगे गंगा अमृत कुम्भ

ओसियाँ, जोधपुर। राजस्थान

गायत्री परिवार ओसियाँ ने गाँव-गाँव संपर्क-गोष्ठियों का अभियान चलाते हुए अपने क्षेत्र के 4000 घरों में कुम्भ का गंगाजल एवं युगऋषि की ज्ञानगंगा को पहुँचाने का बीड़ा उठाया है। डॉ. विक्रम चौधरी ने बताया कि औसियाँ शाखा द्वारा लोहावट, पल्ली, दयाकोर, छीला सहित कई गाँवों में गोष्ठियाँ आयोजित कर इस अभियान की योजना बनाई गई है। श्री मोतीलाल सोनी ने गाँववासियों को बताया कि गौ, गंगा, गीता, गायत्री हमारी संस्कृति के सुदृढ़ आधार हैं। हर व्यक्ति में इनके प्रति आस्था जगाई जानी ही चाहिए।

ओसियाँ क्षेत्र के ग्राम संपर्क अभियान में चल रही गोष्ठी

वार्षिकोत्सव पर लिए गए संकल्प

धरणगाँव, धुले। महाराष्ट्र : 30 दिसम्बर को प्रज्ञापीठ धरणगाँव में प्रज्ञेश्वर महादेव की प्राणप्रतिष्ठा का वार्षिकोत्सव 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ मनाया गया। इसमें जलगाँव एवं धुलिया दोनों जिले के लगभग 200 कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। यह वार्षिकोत्सव दोनों जिलों में ‘आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार’ अभियान के अन्तर्गत युगचेतना का गाँव-गाँव विस्तार करने की उमंग जगाने वाला था। वहाँ शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के निमित्त सम्पन्न कार्यकर्त्ता गोष्ठी में इस आशय के संकल्प उभरे और योजनाएँ बनीं।

कार्यक्रम का सूत्र संचालन श्री भागीरथ शर्मा, श्री बडगुजर आदि ने शानदार ढंग से किया। धरण गाँव प्रज्ञापीठ के मुख्य ट्रस्टी श्री कैलाश मोतीराम चौधरी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपनी अगाध निष्ठा का परिचय दिया।

अश्वमेध महायज्ञ, नागपुर का वार्षिकोत्सव

नागपुर। महाराष्ट्र : गायत्री प्रज्ञापीठ, गायत्री नगर ने सन् 1994 में आयोजित अश्वमेध महायज्ञ के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में 9 दिवसीय यज्ञ, संस्कार आदि के कार्यक्रम आयोजित किए। 1 से 9 जनवरी 2021 की तिथियों में प्रतिदिन प्रातः गायत्री जप, ध्यान, पाँच कुंडीय यज्ञ एवं दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक स्वाध्याय का कार्यक्रम रखा गया था। इसके साथ ही श्रीमती शीला सराटकर की अध्यक्षता मे 35 परिजनों ने दीक्षा,अन्नप्राशन, गर्भ संस्कार एवं मुण्डन आदि संस्कार करवाये। परम पूज्य गुरूदेव के संदेश द्वारा व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण एवं युग निर्माण के संकल्प को पूर्ण करने का उत्साह उभारा गया।

एंजेल वैली स्कूल में पाँच कुण्डीय यज्ञ

भिलाई। छत्तीसगढ़ : दिया छत्तीसगढ़ ने एंजेल वैली स्कूल हुड़को, भिलाई में 17 जनवरी 2021 को पाँच कुण्डीय यज्ञ का भव्य आयोजन किया। इसमें सभी अभिभावकों सहित प्रबंधक समिति के सभी सदस्यों ने भाग लिया।

यज्ञ का संचालन गायत्री साधना केन्द्र, रिसाली की श्री रामस्वरूप साहू, श्री महेन्द्र वर्मा एवं श्री ओरेलाल जी की टोली ने किया। उन्होंने यज्ञ को वातावरण शोधन के साथ जनजीवन में अच्छे संस्कार विकसित करने का प्रबल माध्यम बताया। उन्होंने कहा कि हमारे समाज में स्कूल तो बहुत से संचालित हो रहे हैं, लेकिन अच्छा स्कूल वही है जो बच्चों में शिक्षा के साथ संस्कार भी प्रदान करे।

यज्ञ पुरोहितों ने स्कूलों में सप्ताह में एक दिन यज्ञ कराये जाने का भी आह्वान किया।

मिशन के दो गुना विस्तार की तैयारी

बावेन, कुम्हेर, भरतपुर। राजस्थान

राजस्थान जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जयसिंह यादव द्वारा 25 जनवरी को ग्राम बावेन में गायत्री नवचेतना केन्द्र की औपचारिक स्थापना की गई। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि वास्तविक भारत गाँवों में बसता है। अतः ग्राम चेतना के जागरण और ग्रामोत्थान के बिना राष्ट्र निर्माण की कल्पना संभव नहीं है।

> ग्राम चेतना के जागरण के बिना राष्ट्र निर्माण सम्भव नहीं।
>
> - **श्री जयसिंह यादव,**
> **जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि**

कार्यक्रम में जिले में मिशन के आधार स्तंभ श्री रवि सिंह इन्दौलिया एवं अपनी अहर्निश साइकिल प्रव्रज्या से तहसील के गाँव-गाँव में नवचेतना का संचार करने वाले 75 वर्षीय युवा परिव्राजक श्री श्याम सुन्दर शर्मा मुख्य रूप से उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि श्री श्याम सुन्दर जी द्वारा तहसील के गाँव-गाँव में व्यसन, दहेज, मृत्यु भोज, भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियों के उन्मूलन के लिए क्रान्तिकारी अभियान अभियान चलाया जा रहा है।

इस कार्यक्रम में गायत्री शक्तिपीठ भरतपुर, नदबई, कुम्हेर से जुड़े एवं आसपास के गाँवों से आए लगभग 200 प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। ‘आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार’ अभियान के माध्यम से गायत्री चेतना का दो गुना विस्तार करने के संकल्प उभारे गए।

विशिष्ट प्रसंग — इसी आत्मीयता की तो आवश्यकता है

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी श्री ओमप्रकाश सक्सेना को सम्मानित करते हुए

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि लखनऊ प्रवास पर थे। गोष्ठी में उन्हें ज्ञात हुआ कि अपने बलबूते पर 900 घरों तक परम पूज्य गुरुदेव की पाती ‘अखण्ड ज्योति’ पहुँचा रहे एक कार्यकर्त्ता श्री ओम प्रकाश सक्सेना भी इस गोष्ठी में उपस्थित हैं। यह जानकर वे अत्यंत भावुक हो गये। जब मंच पर डॉ. चिन्मय जी का सम्मान किया जाने लगा तो वे बोले-सम्मान के पात्र तो हमारे ओम प्रकाश भाई साहब है, जिन्होंने गुरुवर के विचारों को 900 घरों में पहुँचाने का संकल्प लिया है।

इतना कहकर वे मंच से उतरे और सभा में बैठे श्री ओम प्रकाश जी के पास जाकर उन्हें शॉल ओढ़ाकर गले लगा लिया। यह देख सभी भावविभोर हो गए। अपने मिशन को घर-घर तक पहुँचाने के लिए इसी आत्मीयता, विनम्रता की ही तो आवश्यकता है।

गायत्री शक्तिपीठ का 21वाँ स्थापना दिवस

गायत्री परिवार लोगों को धर्म-संस्कृति की मुख्य धारा से जोड़ने का काम कर रहा है।

- श्री मुकेश पटेल, स्थानीय विधायक

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश : ‘‘गायत्री परिवार ही एक ऐसी संस्था है, जो गाँव-गाँव जा कर लोगों को सुधारने का कार्य कर रही है और उन्हें धर्म-संस्कृति की धारा से जोड़ रही है।’’

यह भावोद्गार गायत्री शक्तिपीठ अलीराजपुर के 21 वें स्थापना दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में आये विधायक श्री मुकेश पटेल के हैं। समारोह में नगरपालिका के पूर्व उपाध्यक्ष श्री भगवती प्रसाद जायसवाल सहित कई गणमान्य उपस्थित थे। सभी प्रमुख अतिथियों ने शक्तिपीठ की सक्रियता से समाज में आ रहे बदलावों की चर्चा करते हुए 21वें स्थापना दिवस में भागीदारी को अपना सौभाग्य बताया, अपनी सक्रियता-सहयोग का आश्वासन दिया।

शक्तिपीठ के व्यवस्थापक संतोष वर्मा ने बताया कि दो दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा समारोह के प्रथम दिन अखंड जप व दूसरे दिन प्रातः पंचकुंडीय गायत्री यज्ञ-संस्कार हुए। समयदानी कार्यकर्ताओं एवं विशिष्ट सहयोगी-सक्रिय परिजनों का अथितियों के द्वारा गायत्री मंत्र का दुप्पटा ओढ़ाकर एवं श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया।

समारोह को सम्बोधित करते विधायक श्री मुकेश पटेल

विशिष्ट प्रसंग — प्रतिष्ठित पत्रकार की आत्माभिव्यक्ति

पंडित श्री श्रीराम शर्मा प्रत्यक्ष देवता हैं

- श्री हीरेन जोशी, सम्पादक राजस्थान पत्रिका (अलवर, उदयपुर, धौलपुर संस्करण)

अलवर। राजस्थान

2 फरवरी 2021 को अलवर में ‘आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार’ अभियान का श्रीगणेश भरतपुर उपजोन के प्रमुख कार्यकर्त्ता सर्वश्री रवि सिंह इन्दोलिया, श्याम सिंह, ज्ञानेन्द्र शर्मा, सतीश सारस्वत की टोली के माध्यम से हुआ। गणमान्यों के यहाँ गंगाजल कलश स्थापित करने का क्रम आरम्भ हुआ। टोली राजस्थान पत्रिका के अलवर, भरतपुर और धौलपुर संस्करण के संपादक श्री हीरेन जोशी के घर पहुँची। श्री जोशी ने घर-घर कुम्भ और ज्ञानगंगा की स्थापना के अभियान का स्वागत करते हुए कहा-‘‘एक बार किसी संत ने मुझे बताया कि आज के समय में पंडित श्री श्रीराम शर्मा प्रत्यक्ष देवता हैं। उनका ध्यान एवं आह्वान कर के लिया हुआ संकल्प अवश्य पूर्ण होता है। मैंने इसे स्वयं आजमाया है।’’

कुम्भ एवं शान्तिकुञ्ज के प्रतीकों को सपरिवार श्रद्धापूर्वक ग्रहण करते पत्रकार श्री हीरेन जोशी

उल्लेखनीय है कि श्री हीरेन जोशी आध्यात्मिक एवं स्वाध्यायशील हैं। वे गायत्री परिवार से सीधे जुड़े हुए तो नहीं हैं, लेकिन अपने अनुभवों के आधार पर उनकी गायत्री एवं गुरुदेव पर गहन आस्था है।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री कामता प्रसाद साहू, बैसपाली, रायगढ़। छत्तीसगढ़

श्री कामता प्रसाद साहू का 12 जनवरी को आकस्मिक निधन हो गया। वे क्षेत्रीय टोलियों में टोलीनायक, संगीतज्ञ, योगाचार्य की भूमिका निभाते हुए पूज्यवर के विचारों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। धर्मपत्नी श्रीमती पूर्णिमा साहू सहित उनका पूरा परिवार मिशन के लिए समर्पित है। दामाद श्री भरत साहू एवं बेटी श्रीमती सीतांजलि साहू शांतिकुंज के स्थाई कार्यकर्त्ता हैं।

श्री सच्चिदानन्द शर्मा, मुजफ्फरपुर। बिहार

सन् 1980 से ही अपना जीवन पूरी तरह मिशन के लिए समर्पित कर देने वाले श्री सच्चिदानन्द शर्मा 4 फरवरी को 64 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्हें माता-पिता से ही आध्यात्मिकता एवं सेवा की विरासत मिली। गायत्री शक्तिपीठ मुजफ्फरपुर की प्राण प्रतिष्ठा के समय पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से उन्होंने अपने को पूरी तरह मिशन के लिए समर्पित कर दिया। आजीवन अविवाहित रहे। शक्तिपीठ को फर्श से अर्श तक पहुँचाने में उनकी अहम भूमिका थी।

श्री देवशंकर शर्मा, हरिद्वार। उत्तराखण्ड

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा उत्तराखण्ड के राज्य संयोजक मण्डल के सदस्य एवं जिले के प्राणवान वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता श्री देवशंकर शर्मा का 17 जनवरी 2021 को देहावसान हो गया। वे ज्ञानयज्ञ के अग्रणी होता रहे। हरिद्वार, कनखल, ज्वालापुर, भेल क्षेत्र में उन्होंने झोला पुस्तकालय एवं ज्ञानरथ के माध्यम से मिशन का भरपूर प्रचार-प्रसार किया।

श्री जयप्रकाश शर्मा, जोबट। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ जोबट से जुड़ी बहुमुखी प्रतिभा श्री जयप्रकाश शर्मा का 1 फरवरी 2021 को 55 वर्ष की आयु में निधन हो गया। शक्तिपीठ के विविध प्रकल्प-नेत्र संकलन केन्द्र, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, विद्यालय, जिला समन्वय समिति आदि अनेक गतिविधियों में उनकी सक्रिय भागीदारी थी।

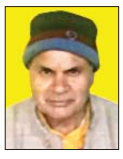

श्री ओमप्रकाश, कांगड़ा। हिमाचल प्रदेश

सन् 2009 से गायत्री परिवार ट्रस्ट धर्मशाल से जुड़े कार्यकर्त्ता श्री ओमप्रकाश जी का 27 जनवरी को 74 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, अखण्ड ज्योति आदि पत्रिकाओं एवं युग साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने में उनकी प्रमुख सक्रियता रही।

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में ऋषिचिन्तन के विस्तार के विशिष्ट प्रयोग

सम्मान

छत्तीसगढ़ में 50 वरिष्ठ जनों का अभिनन्दन

गायत्री परिवार पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य प्रज्ञा मण्डल शांतिनगर सुपेला एवं अखण्ड ज्योति शिक्षण समिति भिलाई ने किया सम्मानित

भिलाई में सम्मानित हुए कुछ बुजुर्ग कार्यकर्त्ता

भिलाई। छत्तीसगढ़

अखिल विश्व गायत्री परिवार पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य प्रज्ञा मण्डल शांतिनगर सुपेला एवं अखण्ड ज्योति शिक्षण समिति भिलाई ने 30 वर्षों से अधिक से समय से मिशन की सेवा में जुटे लगभग 50 कार्यकर्त्ताओं का समारोहपूर्वक सम्मान किया। सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ जोन समन्वयक रायपुर के श्री दिलीप पाणिग्रही, उप जोन समन्वयक एस.पी. सिंह, जिला समन्वयक व्ही.पी. सिंह, सह समन्वयक धीरज लाल टांक, प्रज्ञा मंडल शांति नगर भिलाई के रमेश सोनारे, डॉ. एस. कुमार, एडवोकेट महेश चन्द्र पूर्वा, जयंत पोद्दार ने विगत 50 वर्षों से भी अधिक समय से मिशन की सेवा कर रहे अग्रजों को सम्मानित किया। उन्होंने श्री के.के. विनोद, राम किंकर पाण्डेय एवं पाटले जी दुर्ग का श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र एवं मंत्र दुपट्टा प्रदान कर सम्मानित किया।

दूसरे चरण में उपरोक्त सम्मानित अग्रजों ने विगत 30-35 वर्षों से विभिन्न आन्दोलनों को उल्लेखनीय गति प्रदान करने वाले स्वयंसेवकों को पुष्पगुच्छ तथा सदवाक्य के पोस्टर प्रदान कर सम्मानित किया।

मंचासीन गणमान्यों ने सम्मान की इस परम्परा का स्वागत करते सदैव गरीब, निःशक्त व असहाय लोगों की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहने की प्रेरणा दी। सभी सम्मानित गणमान्यों को भोजन कराया गया। सम्मान समारोह का संचालन डॉ. एस. कुमार एवं आभार प्रदर्शन गायत्री शक्तिपीठ रायपुर से पधारे श्री डी .आर .यादव ने किया।

51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में तहसील के हर गाँव के एक बुजुर्ग दम्पति का सम्मान

यज्ञ करते सम्मानित बुजुर्ग और यज्ञ संचालन करती गायत्री परिवार की टोली

कोसली, रेवाड़ी। हरियाणा

मकर संक्रांति के अवसर पर कोसली में जिला गायत्री परिवार रेवाड़ी द्वारा 51 कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया गया। इसमें तहसील कोसली के हर गाँव के एक बुजुर्ग दम्पति ने यजमान के रूप में भाग लिया। उनका भारतीय संस्कृति के अनुसार सम्मान किया गया। युगऋषि का सत्साहित्य भी उन्हें भेंट किया गया। कोसली के विधायक श्री लक्ष्मण सिंह यादव की सपरिवार यजमान के रूप में भागीदारी रही।

यज्ञ में घर-घर गंगा, घर-घर गायत्री एवं आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार अभियान की विस्तृत जानकारी देते हुए सभी को भागीदारी का आमंत्रण दिया गया। यह कार्यक्रम जिला समन्वयक श्री आर.डी. गुप्ता के समन्वय एवं मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

ग्रामे-ग्रामे यज्ञ अभियान

दूसरे चरण में भी 36 गाँवों में आयोजित हो रहे हैं सार्वजनिक यज्ञ आयोजन

नानपारा, बहराइच। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ नानपारा के तत्वावधान में 10 फरवरी को ग्रामे-ग्रामे गायत्री यज्ञ अभियान का दूसरा चरण आरंभ हुआ। प्रथम चरण के बाद पुनः द्वितीय चरण में नानपारा शक्तिपीठ के कार्यक्षेत्र के चुने हुए 36 गाँवों में सार्वजनिक यज्ञ के साथ मिशन के विभिन्न आन्दोलनों को गति देने वाले कार्यक्रम होंगे। इसके साथ ही घर-घर कुम्भ और शान्तिकुञ्ज के प्रतीकों की भी स्थापना की जाएगी। इस अभियान के लिए ज्ञानरथ का पूजन एवं टोली सदस्यों का मंगल तिलक कर उन्हें समारोहपूर्वक विदाई दी गई।

पहले चरण में भी 36 गाँवों में हुए थे कार्यक्रम

10 फरवरी को रुपडीहा में सायं भव्य दीपयज्ञ के साथ कार्यक्रम श्रृंखला का शुभारम्भ हुआ। इसमें लगभग 250 परिजनों की उपस्थिति रही। कुंभ गंगाजली किट की स्थापना के लिए 24 घरों का पंजीयन किया गया, युवा मंडल का गठन भी हुआ।

शक्तिपीठ की टोली की समारोहपूर्वक विदाई

प्रतिष्ठित महाविद्यालयमें व्यक्तित्व परिष्कार कार्यशाला

आध्यात्मिक जीवन शैली में ढलते हैं महान व्यक्तित्व - श्री अरुण श्रीवास्तव

कार्यशाला में शामिल शिक्षक-विद्यार्थियों का समूह

कन्नौज। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ आलमबाग, लखनऊ ने 10 फरवरी को एम. एस.एम.ई. मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त संस्था फैग्रेंस एण्ड फ्लेवर डेवलपमेण्ट सेण्टर, कन्नौज में व्यक्तित्व परिष्कार कार्यशाला का आयोजन किया। एरोमा टैक्नोलॉजी पाठ्यक्रम के 30 विद्यार्थियों ने इसका लाभ लिया। कार्यक्रम संचालन के लिए श्री अरुण श्रीवास्तव, श्री अशोक गुप्ता एवं श्री जे.पी. यादव पहुँचे थे। संस्थान के प्रिंसिपल-डायरेक्टर श्री एस.वी. शुक्ला एवं अन्य संकाय के सदस्यों ने भी कार्यशाला में भाग लिया।

गायत्री परिवार के प्रवक्ताओं ने सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, अल्बर्ट आइंस्टीन आदि महापुरुषों के जीवन की व्याख्या करते हुए बताया कि अध्यात्म बड़े लक्ष्य के लिए अनुशासित जीवन और लक्ष्य के लिए समर्पित रहने की प्रेरणा देता है। ऐसे व्यक्ति समय के प्रवाह में बहने की अपेक्षा विवेकपूर्वक अपनी राह स्वयं बनाते हैं।

श्री अरुण जी ने विद्यार्थियों को गायत्री उपासना-साधना करने तथा गायत्री परिवार से जुड़कर रचनात्मक आन्दोलनों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

प्रिंसिपल-डायरेक्टर श्री एस.वी. शुक्ला जी को एक वाङ्मय व सूक्ष्म यज्ञ किट भेंट किया गया। सभी विद्यार्थियों को युगऋषि का साहित्य दिया गया। कार्यक्रम संचालन में सुश्री प्रज्ञा का विशेष योगदान रहा।

ऋषि परम्परा का पुनर्जीवन

ध्वजारोहण के बाद गायत्री यज्ञ में विश्व कल्याण की प्रार्थना

देवास। मध्य प्रदेश

26 जनवरी को गायत्री शक्तिपीठ साकेत नगर और प्रज्ञापीठ विजय नगर में 72वाँ गवतंत्र दिवस अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक ऋषि परम्परा के अनुसार मनाया गया। ध्वजारोहण के पश्चात् गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ। इसमें विश्व शांति,विश्व कल्याण की प्रार्थना की गई तथा राष्ट्र के लिये अपना जीवन न्यौछावर करने वाले वीर शहीदों की आत्मशांति के लिये विशेष मंत्रों की आहुतियाँ यज्ञ देवता को समर्पित की गईं।

कार्यक्रम का शुभारम्भ वेदमाता गायत्री, परम पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी एवं भारत माता की प्रतिमाओं के पूजन के साथ किया गया। तत्पश्चात् श्री मुकेश तिवारी, इंदौर उपजोन के समन्वयक ने ध्वजारोहण किया। उन्होंने राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए देशवासियों के चिन्तन, चरित्र एवं व्यवहार में राष्ट्रप्रेम जगाने की मार्मिक प्रेरणा दी। उपस्थित जन समुदाय ने इस परम्परा की बहुत सराहना की।

एक प्रशंसनीय परम्परा

पेटलावद, झाबुआ। मध्य प्रदेश

पेटलावद शाखा ने विवाह दिवस जैसे अवसरों पर दीपयज्ञ के साथ एक प्रशंसनीय परम्परा आरम्भ की है। यदि संस्कार कराने वाला परिवार ऋषि चिंतन से पहले से जुड़ा न हो तो उनसे दक्षिणा स्वरूप अखण्ड ज्योति और प्रज्ञा अभियान का वार्षिक सदस्यता शुल्क लिया जाता है और सदस्य बनाया जाता है। इन संस्कारों के साथ ही हर वर्ष पत्रिकाओं की सदस्यता के नवीनीकरण का क्रम भी जोड़ दिया गया है।

जन्मदिन पर पत्रिका सदस्यता नवीनीकरण

युगचेतना को घर-घर प्रतिष्ठित करने के लिए उत्साहित है नवयुग की तरुणाई

क्रान्तिकारी दीप महायज्ञ एवं दम्पति शिविर

सलाई, खण्डवा। मध्य प्रदेश

युग निर्माण जिला खण्डवा के ग्राम सलाई में एक क्रांतिकारी दीप महायज्ञ एवं दम्पती शिविर सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान के अन्तर्गत 10 गाँवों में घर-घर कुम्भ और शान्तिकुञ्ज के प्रतीकों को पहुँचाने के संकल्प उभारे गए। मिशन की तीनों पत्रिकाओं अखंड ज्योति, युग निर्माण योजना और पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के 30-30 सदस्य बने। 24 कन्याओं को मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ वितरित की गईं।

युगचेतना विस्तार के लिए संकल्पित नवयुवक

गुणों का विकास एकान्त में अच्छी तरह होता है और चरित्र का निर्माण संसार के भीषण कोलाहल में होता है। - गेटे

जनजागरण के केन्द्र हमारे शक्तिपीठ

वनवासी अंचल-उदयपुर संभाग का जाग्रत् तीर्थ

गायत्री शक्तिपीठ सागवाड़ा

श्रद्धा-सक्रियता का अद्वितीय आदर्श

सागवाड़ा, डुंगरपुर। राजस्थान

हमारी शक्तिपीठें ऊँचे और सुसज्जित भवनों के आधार पर नहीं, कार्यकर्त्ताओं की श्रद्धा और सक्रियता के आधार पर जनजागरण के आदर्श केन्द्र बनी हैं। ऐसा ही एक उदाहरण है राजस्थान के वनवासी अंचल बागड़ क्षेत्र की गायत्री शक्तिपीठ सागवाड़ा। गायत्री माता मंदिर और महाकाल मंदिर के साथ साधना, संस्कार, प्रशिक्षण, रचनात्मक गतिविधियों की सभी सुविधाओं से युक्त यह शक्तिपीठ कार्यकर्त्ताओं के संकल्प बल से सन् 2015 में मात्र एक वर्ष में ही बनकर तैयार हो गई थी। आज यह हर दृष्टि से परम पूज्य गुरुदेव के सपनों को साकार कर रही है। कुछ विशेषताएँ देखें-

50 गाँव : इस शक्तिपीठ का कार्यक्षेत्र लगभग 50 से अधिक गाँवों का है। इन गाँवों की दीवारों पर सद्वाक्य लिखे गए हैं। वहाँ यज्ञ-संस्कार आदि के नियमित कार्यक्रम होते हैं।

प्रतिष्ठित तीर्थ : पूरे अंचल से श्रद्धालु सामूहिक उपनयन, विवाह आदि संस्कार कराने शक्तिपीठ पर आते हैं।

अखण्ड दीप-अखण्ड अग्नि : पिछले पाँच वर्षों से अखण्ड दीप प्रज्वलित है, यज्ञशाला में अखण्ड अग्नि स्थापित है, दैनिक दिनचर्या शान्तिकुञ्ज जैसी ही है।

उपजोन मुख्यालय : यह उदयपुर संभाग का उपजोन है। संभाग स्तरीय गोष्ठियों, प्रशिक्षण शिविरों की गतिविधियाँ निरन्तर चलती रहती हैं।

प्रतिष्ठित प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य केन्द्र : वर्तमान में वहाँ 72 लोगों को ठहराने की उचित व्यवस्था है, जिसका सदुपयोग करते हुए हर माह 20 से 29 तक की तिथियों में नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र चलते हैं। यह आध्यात्मिक साधना के साथ समग्र स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से भी चलाए जाते हैं, जिनमें प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से मोटापा, माईग्रेन, तनाव, अवसाद, कमर दर्द, घुटनों का दर्द, मधुमेह, रक्तचाप, अनिंद्रा, कब्ज, अपच जैसे जटिल रोगों का सफलतापूर्वक उपचार किया जाता है। हर शिविर में 40 साधकों के भोजन-आवास की निःशुल्क व्यवस्था की जा रही है। इन शिविरों में देश के कोने-कोने से लोग आते हैं।

सुरम्य वातावरण : एक छोटी सी गौशाला है। 16000 स्क्वायर फीट में गृह वाटिका, नक्षत्र वाटिका एवं राशि वाटिका निर्मित की गई है। वाटिका के चारों तरफ औषधीय गुण वाले पौधे लगाए गए हैं एवं एक्यूप्रेशर टाइल्स लगाई गयी हैं। पूरे परिसर में साउंड कम लाइट सिस्टम लगाया गया है। शक्तिपीठ पर सैकड़ों लोग प्रतिदिन यहाँ शारीरिक, मानसिक, आत्मिक स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने आते हैं।

प्रतिवर्ष 5000 वृक्षारोपण : प्रतिवर्ष 5000 से ज्यादा बड़े-बड़े छायादार, फलदार व औषधीय गुण वाले पौधों का रोपण, रक्षण एवं संवर्धन किया जाता है।

क्रान्तिकारी व्यसनमुक्ति अभियान : पूरे जिले में व्यसन मुक्ति का प्रभावशाली आन्दोलन चलाया जा रहा है। 92 गाँवों में व्यसनमुक्ति दीपयज्ञ कर गुजराती पाटीदार समाज के हजारों लोगों को व्यसन मुक्त किया गया।

छात्रावास की भावी योजना : इस शक्तिपीठ की अगले दिनों 200 कमरों वाले आवासीय छात्रावास बनाने की योजना है, ताकि यहाँ रहने वाले विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा के साथ नैतिकता, संस्कार, स्वावलम्बन एवं मिशन परक योग्यता का पाठ भी पढ़या जा सके।

आओ जानें विश्वविद्यालय अपना

विश्व के सबसे युवा देश भारत में स्वावलंबन की दिशा में स्टार्ट अप्स एवं स्व-उद्यमिता के इस युग में इंक्यूबेशन एवं ट्रेनिंग के नए आयामों को लिए लीक से हटकर देव संस्कृति विश्वविद्यालय सफलता के नए सोपान गढ़ रहा है एवं वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित संस्थानों एवं विषय विशेषज्ञों संग रचनात्मक कार्य कर रहा है.

www.dsvv.ac.in

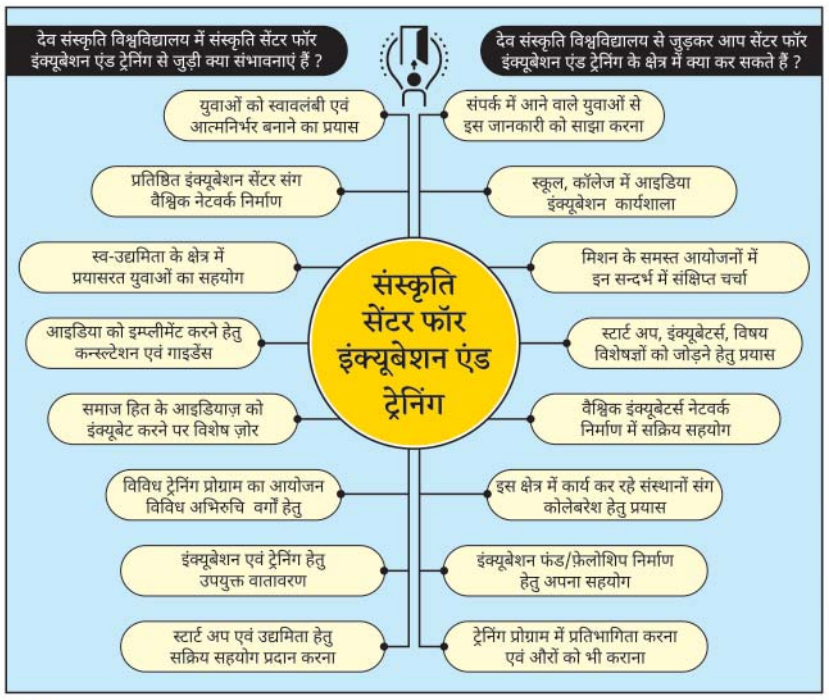

संस्कृति सेंटर फॉर इंक्यूबेशन एंड ट्रेनिंग (संपर्क सूत्र) -
ईमेल : incubate@dsvv.ac.in • मो. नं.: +91 - 9258360961
@dsvvofficial Dev Sanskriti Vishwavidyalaya

वर्तमान में संस्कृति सेंटर फॉर इंक्यूबेशन एंड ट्रेनिंग : एनीमेशन एवं विजूअल इफ़ेक्ट्स, मास कम्यूनिकेशन, इन्फोर्मेशन कम्यूनिकेशन टेक्नोलोजी, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस, भाषा विज्ञान, स्वास्थ्य एवं मनोवैज्ञानिक परामर्श,पर्यावरण, ग्राम प्रबंधन आदि संबन्धित विषयों पर प्रमुखता से कार्य कर रहा है.

अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से श्रेष्ठ प्रयोजनों हेतु प्रस्तुत कर जन-जन को जोड़ने के लक्ष्य संग आइये हम सब सतत परस्पर प्रगति करें।

देसंविवि शक्तिपीठों संग विकसित करेगा एग्रो टूरिज़्म केन्द्र

(आवाहन आमंत्रण सभी को - संपर्क करें एवं आदर्श शक्तिपीठ निर्माण की दिशा में एक और कदम बढ़ाएँ)

शक्तिपीठ में एग्रो टूरिज़्म केन्द्र विकसित करने की प्रक्रिया को आरंभ करने हेतु अनिवार्य

- देव संस्कृति विश्वविद्यालय से संवाद।
- देव संस्कृति विश्वविद्यालय की ओर से निर्मित इस संदर्भ में चेक लिस्ट के अनुरूप निम्न डेटा उपलब्ध कराना - क्या आपके पास कृषि योग्य भूमि उपलब्ध है ? कितनी भूमि है ? कहाँ पर है ? ट्रस्ट कौन संचालित कर रहा है? एड्रैस डिटेल ? स्थान-ग्रामीण, कस्बा या शहरी है? बिजली की सुविधा कैसी है? पानी की व्यवस्था कैसी है? आप इस केंद्र के माध्यम से क्या करना चाहेंगे? इत्यादि।
- विषय विशेषज्ञों की टीम स्थान विजिट करेगी तत्पश्चात मिलजुलकर आगामी कार्ययोजना बनेगी।

- विश्व स्तर पर अपनी विशिष्ट ख्याति रखने वाला देव संस्कृति विश्वविद्यालय स्वयमेव एग्रो टूरिज़्म (एग्रो बेस्ड टूरिज़्म) का एक विशिष्ट मॉडल एवं प्रशिक्षण केंद्र हैं।
- एग्रो टूरिज़्म के क्षेत्र में निर्मित आदर्श मॉडल को विश्व भर में विकसित करने हेतु अखिल विश्व गायत्री परिवार के शक्तिपीठों एवं विविध केन्द्रों को भाव-भरा आमंत्रण है।

क्या है एग्रो टूरिज़्म (एग्रो बेस्ड टूरिज़्म) ?

पर्यटन एवं कृषि के सम्मिलित स्वरूप को सतत विकास, ग्राम विकास, ग्राम स्वावलंबन एवं रोजगार सृजन संग जोड़ कर हम स्थान विशेष को विकसित करते हैं, जिस माध्यम से एक ओर कृषि नवीन तकनीकों से विकसित होती है साथ ही कृषि फार्म भी स्वयं में आगंतुकों, पर्यटकों हेतु दर्शन, शिक्षण एवं स्वस्थ सृजनात्मक मनोरंजन एवं प्रेरणा के केंद्र बन जाते हैं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय
- ग्राम पर्यटन में विशेषज्ञता
- ग्राम प्रबंधन में विशेषज्ञता
- ग्राम स्वावलंबन में विशेषज्ञता

अखिल विश्व गायत्री परिवार
- आदर्श ग्राम योजना महाभियान
- शक्तिपीठ एवं रचनात्मक केन्द्रों का वैश्विक नेटवर्क

शक्तिपीठ जन-जागरण के केंद्र बनें इस हेतु पूज्य गुरुवर के आवाहन, श्रद्धेय डॉ साहब, श्रद्धेया जीजी की प्रेरणा से शांतिकुंज स्थापना के इस स्वर्ण जयंती वर्ष में आदर्श शक्तिपीठ निर्माण की दिशा में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण क्रम से जुड़ने एवं एग्रो टूरिज़्म आदर्श मॉडल निर्मित करने का एक अद्भुत अवसर सभी के समक्ष उपलब्ध है। आत्मीय स्वजन विस्तृत जानकारी हेतु निम्न मोबाइल नंबर एवं ईमेल आईडी पर संपर्क करें -

provc@dsvv.ac.in +91 - 9258369751, 9258369771 @dsvvofficial Dev Sanskriti Vishwavidyalaya • www.dsvv.ac.in

मुनि महाश्रमण जी से चर्चा करते डॉ. चिन्मय जी

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का विराट मिशन वंदनीय है।

- मुनि महाश्रमण जी

अपने छत्तीसगढ़ कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक 1 फरवरी 2021 को डॉ. चिन्मय पंड्या जी केशकाल (जिला कोण्डागाँव) में जैन मुनि महाश्रमण जी से मिले एवं उन्हें पूज्य गुरुदेव का साहित्य एवं गंगाजल भेंट किया। मुनि महाश्रमण जी ने कहा पीड़ा और पतन निवारण के लिए पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का विराट मिशन वंदनीय है। गायत्री परिवार मनुष्य में देवत्व का उदय के लिए धरती पर स्वर्ग के अवतरण के उनके संकल्प को पूरा करने के लिए अभूतपूर्व कार्य कर रहा है। इस अवसर पर डॉ. चिन्मय पंड्या जी ने उन्हें शांतिकुंज में आने का निमंत्रण भी दिया।

छत्तीसगढ़ की राज्यपाल श्रीमती अनुसुईया उइके को गंगा अमृत कुम्भ साहित्य भेंट करते केन्द्रीय व स्थानीय वरिष्ठ प्रतिनिधि

निर्माण की दिशाएँ भिन्न होती हैं। लीक पर चलकर कोई नई राह नहीं बनी। - नेपोलियन

परम पूज्य गुरुदेव के बोध दिवस पर श्रद्धेयद्वय द्वारा पूजन

'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' पर गुरुसत्ता को श्रद्धाञ्जलि

धर्म-ध्वजारोहण समारोह

'शान्तिकुञ्ज' एक अभियान है युगशक्ति के वैश्विक विस्तार का

स्वर्ण जयन्ती वर्ष में अश्वमेध जैसे उत्साह के साथ गतिशील है यह क्रान्तिकारी अभियान

परम पूज्य गुरुदेव के बोध दिवस-पावन वसन्त पर्व पर नवयुग की गंगोत्री ने किया करोड़ों हृदयों में वासन्ती उमंगों का संचार

विगत एक वर्ष से छाये कोविडवायरस संकट के लम्बे कुहासे के बाद नवयुग की ज्ञानगंगोत्री-शान्तिकुञ्ज में एक बार फिर से उमंग और उत्साह का वातावरण लौट आया। यद्यपि पिछले लगभग डेढ़ माह से इस स्वर्णिम सूर्योदय का आभास होने लगा था, लेकिन परम पूज्य गुरुदेव के बोध दिवस के अवसर पर भोर के सूरज की पहली किरण की तरह शान्तिकुञ्ज में उमंग, उल्लास, आत्मीयता और भावसंवेदनाओं का दिव्य वातावरण विनिर्मित हुआ दिखाई दिया। सभी प्रशासनिक दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए हज़ारों की संख्या में लोग आये। उत्तराखण्ड में तो शान्तिकुञ्ज संस्कार कराने के लिए एक प्रतिष्ठित तीर्थ की मान्यता रखता ही है, लेकिन वसंत पर्व पर देश-विदेश के लोग 300 से अधिक बटुकों के यज्ञोपवीत संस्कार कराने आए। एक हज़ार से अधिक लोगों ने श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के श्रीमुख से गुरुदीक्षा संस्कार कराया।

भविष्य सुखद है

"जब-जब भी ग्यारह वर्षों के बाद कुम्भ आया है, वातावरण में विषाक्तता छाई है। इस विषाक्तता को दूर करने के लिए घर-घर यज्ञ, दुष्प्रवृत्तियों के मिटाने के लिए घर-घर संस्कार और कुविचारों को हटाने के लिए पूज्य गुरुदवे की ज्ञानगंगा को पहुँचाना होगा। इसके बाद स्थिति बड़ी सुखद होगी।"

- श्रद्धेया शैल जीजी

श्रद्धेया जीजी-डॉ. साहब के श्रीमुख से गुरुदीक्षा

यज्ञोपवीत संस्कार कराते 300 से अधिक बटुक

कार्यक्रम

- 24 घण्टे का अखण्ड जप

(15 फरवरी प्रातः 4 बजे से 16 फरवरी प्रातः 4 बजे तक)

- **भव्य शोभायात्रा**

हर वर्ष की तरह वसंतोत्सव का संदेश देने के लिए शोभायात्रा निकली। यह शान्तिकुञ्ज से आरम्भ होकर हरिपुरकलाँ होते हुए देव संस्कृति विश्वविद्यालय का भ्रमण कर पुनः शान्तिकुञ्ज लौटी। गुरुस्मारकों पर प्रेरक संदेश और आरती के साथ समापन हुआ।

जनजागरण शोभायात्रा

वसन्त पर्व का संदेश-विशिष्ट भावाभिव्यक्तियाँ

जीवन का सौन्दर्य है ज्ञान

- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

ज्ञान है तो जीवन सुखमय है, सार्थक है। माँ सरस्वती हमारी चेतना को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करती है। संसाधनों पर ज्ञान का, महासरस्वती का नियन्त्रण न हो तो सब व्यर्थ है। यह ज्ञान तप-साधना से कषाय-कल्मषों को धोने, विकृतियों को दूर करने के बाद विमल प्रेम एवं परम सत्य की सुखद अनुभूतियों से और गुरु के प्रति सच्चे समर्पणभाव से प्राप्त होता है। कड़ी परीक्षाओं के बाद ही बड़े अनुदान प्राप्त होते हैं।

वसंत प्रेम है, बलिदान है, ज्ञान है, सौन्दर्य है। जब जीवन में वसंत आता है तो जीवन साधना और राष्ट्रप्रेम की भावनाएँ तरंगित होने लगती हैं। स्वामी विवेकानन्द, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, भगत सिंह आदि के जीवन में ऐसा ही वसन्त आया था, जिसने उन्हें अजर-अमर कर दिया। ऐसी ही वासंती प्रेरणाओं से उन्होंने अपने गुरुप्रेम, ईश्वर प्रेम में राष्ट्रभक्ति एवं जीवन साधना की आहुतियाँ डालीं थीं।

प्रकृति के नवोन्मेष का पर्व है वसंत

वसंत से बड़ा कोई पर्व नहीं। यह प्रकृति के नवोन्मेष का पर्व है। वसंत में प्रकृति नया परिधान पहनती है। वसंत की ऊषा से प्रकृति की ठिठुरन दूर होती जाती है। उसी प्रकार जीवन में जब वसंत आता है तो जीवन की शिथिलता, नकारात्मकता दूर होती जाती है, नयी सामर्थ्य और नए संकल्प उभरते हैं। जिसके जीवन में भी वसंत आया वह महान् होता चला गया। इस वसंत को अनुभव करने के लिए आपको युवा बनना चाहिए।

ज्ञानमूलक समाज की स्थापना हो

आज की आवश्यकता ज्ञानमूलक समाज की है, सद्ज्ञान एवं सद्विचारों के साबुन से जीवन की मलीनताओं को धोने की है। जैसे-जैसे मलीनता का नाश होगा, सद्भावों का उदय होगा, सत्कर्म बढ़ते जाएँगे।

वसंत अर्थात्-आदेश का पालन

- परम वन्दनीया शैल जीजी

वसंत हर्ष, उल्लास, प्रेरणाओं का पर्व है। एक बार लोगों ने परम पूज्य गुरुदेव से इस विषय में पूछा, ''गुरुदेव! आपकी निगाह में वसन्त क्या है?'' गुरुदेव बोले, ''मेरी निगाह में एक ही चीज है वह है गुरु-आदेश।''

परम पूज्य गुरुदेव ने दादा गुरुदेव के आदेश का अक्षरशः पालन करते हुए 24 साल तक 24 साधना महापुरश्चरण किए, स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी की, नित्य स्वाध्याय और लेखन का व्रत निभाकर अपने वजन से भी अधिक साहित्य लिखा।

परम पूज्य गुरुदेव ने हिमालय में तप करते हुए अपने व्यक्तित्व को इतना शीतल बना लिया था कि जो भी तपन भरा हृदय लेकर उनकी शरण में आया वह शीतलता पाता चला गया। वे गायत्रीमय हो गए थे। उनका सान्निध्य जिन्हें भी प्राप्त हुआ वह नवजीवन पाता चला गया।

हमारे गुरुदेव ज्ञानस्वरूप थे। उनके ज्ञान का दीप हम अपने अंतरंग में जलाएँ। आप सबके जीवन में वासंती उल्लास समाता चला जाएगा।

दैवी अभियान की स्वर्ण जयन्ती

- डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

शान्तिकुञ्ज, जिसकी हम स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं वह केवल भवन नहीं, परम पूज्य गुरुदेव का स्थूल शरीर है। इसकी दिव्यता का प्रवाह सारे संसार तक पहुँच रहा है। शान्तिकुञ्ज भवन की दृष्टि से, संसाधनों की दृष्टि से, परिसर की दृष्टि से अन्य अनेक संस्थाओं से छोटा भले ही हो, लेकिन उद्देश्य की दृष्टि से बहुत महान है। शान्तिकुञ्ज का लक्ष्य है मनुष्य की चेतना के समग्र रूपान्तरण की मनोभूमि तैयार करना। इस धरती से ऋषिसत्ताओं के संकल्प और तप से युग को बदलने की, मानव को देवता और धरती को स्वर्ग बनाने की सामर्थ्य विश्वव्यापी हो रही है।

यह स्वर्ण जयन्ती है-

- इस भूमि से दैवीय योजना के संचालन के शुभारम्भ की
- ऋषिसत्ताओं के सनातन अभियान के पुनर्जीवन की
- नवयुग की ज्ञानगंगोत्री से सद्ज्ञान के वैश्विक विस्तार की
- यज्ञ एवं संस्कारों की पुण्य परम्परा के व्यापक विस्तार की
- सनातन संस्कृति के नवोत्थान के अभियान की

9 वर्षीय मातृशक्ति श्रद्धाञ्जलि नवसृजन महापुरश्चरण

24000 लोगों की भागीदारी

नौ दिवसीय मातृशक्ति श्रद्धाञ्जलि नवसृजन महापुरश्चरण के अन्तर्गत पिछले दो वर्षों से वसन्त पंचमी से होली तक 40 दिवसीय विशिष्ट साधना अनुष्ठान चल रहा है। इस वर्ष 15 फरवरी के दिन श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने शान्तिकुञ्ज से ऑनलाइन इसका संकल्प कराया। उन्होंने इसके उद्देश्य एवं अनुशासन की विस्तृत जानकारियाँ भी दीं। इस अनुष्ठान के लिए विश्व के 24000 से अधिक लोगों ने शान्तिकुञ्ज में पंजीयन कराया है।

वसंत पर्व पर साहित्य विमोचन

- चमत्कारी विशेषतारे भरा मानवीय मस्तिष्क (वाङ्मय खण्ड-18 का ओडिआ अनुवाद)
- रूसी चिन्तनर सानिध्य रे, भाग-2 (ओडिआ)
- छत्तीसगढ़ महतारी चालीसा (लेखक : पुनीत गुरुवंश)

हिन्दी भाषा में

- महाशक्ति गायत्री-सावित्री : एक अध्ययन (लेखक : डॉ. गायत्री किशोर त्रिवेदी)
- हिमालय की वादियों में (यात्रा वृत्तांत) (लेखक : प्रो. सुखनंदन सिंह)
- आध्यात्मिक पत्रकारिता (लेखक : प्रो. सुखनंदन सिंह)
- मुद्रा चिकित्सा विज्ञान (सिद्धान्त एवं प्रयोग) (लेखक : डॉ. गायत्री एवं डॉ. अमृत गुरुवेन्द्र)
- युगऋषि (नवयुग दल, टाटानगर)

- **पूर्व संध्या पर विशेष उद्बोधन**

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने ऑनलाइन दिए अपने उद्बोधन में शान्तिकुञ्ज की विशेषता, स्वर्ण जयन्ती वर्ष की विशेषता और 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' जैसी कार्ययोजनाओं पर प्रकाश डाला।

- **धर्म ध्वजारोहण**

वसंत पर्व के दिन प्रातःकाल श्रद्धेया जीजी एवं डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी ने संक्षिप्त-सादगीपूर्ण समारोह के साथ धर्मध्वजारोहण किया।

- **साहित्य विक्रय केन्द्र में पूजन**

शान्तिकुञ्ज में साहित्य विक्रय केन्द्र का लोगों की सुविधा की दृष्टि से विस्तार किया गया है। श्रद्धेयद्वय द्वारा पूजन से इसका शुभारंभ हुआ। इस केन्द्र में प्रदर्शित पुस्तकों को देखने और स्वयं चुनने की व्यवस्था है।

उन्नत साहित्स केन्द्र में प्रथम पूजन करते श्रद्धेय

- **दीक्षा संस्कार तथा माँ सरस्वती, गुरुदेव-माताजी व वसंत पर्व पूजन, पर्व संदेश, साहित्य विमोचन**

श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. साहब द्वारा यह सभी कार्यक्रम अपने भेंट-परामर्श कक्ष में सम्पन्न कराए गए, ऑनलाइन प्रसारण हुआ, लाखों लोगों ने लाभ लिया।

- **यज्ञ-संस्कार** : वसंत पर्व के नियमित यज्ञ के अलावा 11 जोड़ों के आदर्श विवाह, 300 से अधिक बटुकों के यज्ञोपवीत संस्कार एवं अन्य संस्कार बड़ी संख्या में हुए।
- **दीपयज्ञ** : सायंकाल श्री श्याम बिहारी दुबे एवं श्री सदानन्द आंबेकर की टोली ने दीपयज्ञ सम्पन्न कराया।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार सम्पादन : फोन 9258369413
email : news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 27.2.2021
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23